राम राम ही कहा करूँ

राम राम ही कहा करूँ, राम संग ही रहा करूँ।
इतनी चाहना मेरी, राम रंग में बहा करूँ।।

आँसू तो शुष्क हुए मेरे, नयनों में हैं अब राम बसे।
अब सब जा पर ही सखी मेरी, बस राम राम हैं दीख रहे।।

है राम ने पुकार लिया मुझको, सब संशय दूर हुए।
तन राम का भया मेरा अब से, 'मैं' 'मेरा' दूर हुए।।

कर मेरा थामा नहीं उसने, कर मेरा राम भया।
मेरा तो नाम अब मिटने लगा, अब राम का नाम रहा।।

राम राम ही कहा करूँ, राम में ही अब रहा करूँ।
सब राम राम ही है, मैं तो राम में बहा करूँ।।

जो देखा राम राम ही है, सब दृश्य राम राम ही है।
देखे है सखी जो इस तन को, वह द्रष्टा राम राम ही है।।

बस राम हैं कह गये यह सब, अब राम ही साथी भये।
यह मुख भी पिया सब तेरे हैं, सब राम ही गाते रहें।।

- परम पूज्य माँ

(प्रार्थना शास्त्र नं. २, प्रार्थना नं. ३५३ - ९.४.१९६०)

अनुक्रमणिका

३. उनकी रहमतें बोलती नहीं...
श्रीमती पम्मी महता

८. ...केतीआ सुरती सेवक केते नानक अंतु न अंत!
अर्पणा प्रकाशन 'जपुजी साहिब' में से

१२. दिव्य जीवन...
पूज्य छोटे माँ द्वारा संकलित

१६. सब रेखा तो पूजा क्यों?
अर्पणा प्रकाशन 'ज्ञान विज्ञान विवेक' में से

२०. जग को सुन्दर बनाने के यत्न...
अर्पणा प्रकाशन 'श्रीमद्भगवद्गीता -

२६. चरण में तेरे बैठ के, इस चाहना को जलाना है!
'मुण्डकोपनिषद्' में से

३०. वह ज्ञान, ज्ञान नहीं जो जीवन में न उतरे!
श्रीमती शान्ता देवी

३३. आप सृष्टि रचयिता ने मुझमें काया ले ली..
श्रीमती पम्मी महता

३६. अर्पणा समाचार

सम्पादक की ओर से

गद्य में प्रस्तुत सभी लेख साधकों के प्रश्नों के उत्तर में परम पूज्य माँ द्वारा प्राप्त सत्संगों पर आधारित हैं और संकलन-कर्ता की निजी समझ के अनुकूल हैं। काव्य की पंक्तियाँ पूज्य माँ के मुखारविंद से प्रवाहित दिव्य प्रवाह का अंश हैं; जिसे सुश्री छोटे माँ ने लेखनी बद्ध किया है। अपनी पूर्ण सामर्थ्य के अनुसार उसे ज्यों का त्यों प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुति में किसी भूल के लिये हम क्षमा प्रार्थी हैं।

सम्पादक : *पूनम मलिक*
सह सम्पादक : *श्रीमती साधना पाल*

पता : अर्पणा आश्रम, मधुबन, करनाल
१३२ ०३७, हरियाणा, भारत

श्री हरीश्वर दयाल, अर्पणा ट्रस्ट, मधुबन, करनाल १३२ ०३७ ०१, हरियाणा द्वारा जून २०१८ को प्रकाशित तथा सोना प्रिन्टर प्राईवेट लिमिटेड, एफ -८६/१, ओखला इण्डस्ट्रियल एरिया फेज़-I, नई दिल्ली ११० ०२० द्वारा मुद्रित

उनकी रहमतें बोलती नहीं, मिल जाती हैं!

श्रीमती पम्मी महता

हे श्रद्धेय श्री हरि माँ, आप ही में जन-जन की श्रद्धा हो और आंतर की 'मैं' की कालिमा से सभी को निजात मिल जाये.. यही सच्चे व सुच्चे हृदय से सभी के लिए प्रार्थना करती हूँ। हे श्री हरि, इसी प्रार्थना-याचना के साथ आपके श्री चरणन् में बैठ आपकी वाणी का श्रवण, मनन कर पाऊँ.. यूँ ही आपके प्यार का आशीर्वाद मिला रहे मुझे। यही मेरी विनम्र याचना स्वीकार लीजिये!

हे श्री हरि माँ, आपकी वाणी का सदा श्रवण करती रहूँ जो अतीव सुखदायी है। जीवन में सच्चे सद्‌गुरु का होना कितना अनिवार्य है, कैसे कहूँ.. आप बिन न तो गति मिलती है और न ही सद्‌गति मिलती है! आप श्री हरि माँ की ही हमेशा कृपा माँगती हूँ और आपके ही साथ बंधी रहने की याचना भी करती हूँ।

उन्हीं से उन्हीं की राह माँगिये! वे दीनानाथ, दीनदयाल व कृपालुनाथ तुरन्त आ जाते हैं। मगर कभी भी उन्हें 'टैस्ट' (test) मत कीजिये.. हम ही हैं जो उन्हें बुला कर अपनी क्षुद्र इच्छाओं व ओछी वृत्तियों के साथ बार बार उनसे बिछुड़ जाते हैं। हमारी वासनाओं ओर कामनाओं का जंगल इतना घना है कि

उसमें से बाहर निकल पाना हमारे बस की बात नहीं। हम स्वयं उनसे बाहर नहीं आ पाते.. केवल आप श्री हरि माँ से याचना सच्चे हृदय से करें तो वही हम पर कृपा करी हमें बाहर ले आते हैं। आप परम वन्दनीय व परम पूज्य हैं!

श्री हरि माँ को पाने की सच्चे व सुच्चे हृदय से याचना करें तो श्री हरि माँ तुरन्त आ कर हृदय से लगा लेंगे हमें उठाने के लिए! सभी प्रयास करेंगे! हम ही बस श्रद्धा, आस्था के आड़े अपनी ही तुच्छ मान्यताओं को न आने दें.. दूर से उनकी हर देन के दर्शन कर कृतज्ञ हुए उन्हीं की अनुकम्पा माँगें! कौन सी रहगुज़र से गुज़ार कर ले जायेंगे, यह हे मन, उन्हीं पे छोड़ दे पूर्णतया मन को मौन करी!

वे जानी जान हैं! सभी जानते हैं.. कब क्या देना है.. हमारे आंतर से वे भली-भाँति परिचित हैं। इसलिए अपने मुखौटों को, जो हमने दिखावे के लिए पहन रखे हैं; उन्हें उतार कर, हम जैसे हैं वैसे ही समर्पित कर दें स्वयं को! माँ प्रभु जी हमें स्वयं सम्भाल लेंगे! इतनी आस्था होनी आवश्यक है।

हम जान गये हैं कि मायापति भी आप हैं और लीलापति भी आप ही हैं। कब माया से निकाल अपनी लीला में ले जायेंगे, उसके लिए जितनी भी प्रतीक्षा करनी पड़े हमें कर लेनी चाहिए.. कहते हैं सब्र का फल मीठा होता है। सो, क्या पता लीलापति ने अपनी लीला में क्या देना है.. बस उनसे मिली उनकी नवाज़िशों पे संशय रहित होकर यूँ ही जीवन में चलते चले जाना चाहिए।

ज़िन्दगी के किस मोड़ पर हमारे हृदयदामन में व हमारी झोली में वह कब क्या डाल देंगे कोई नहीं जानता! उनके कृपाप्रसाद के लिए झोली पसारे रखिये। उनकी रहमतें बोलती नहीं, मिल जाती हैं! आप आत्मविभोर हो उठते हैं! इसलिए कृतज्ञ हुए, उन्हीं की अनुकम्पा माँगें, किस राह से कब ले जायेंगे उन्हीं पे छोड़ दें.. पूर्णतया मन को मौन करी.. इस तरह उनकी अनगिनत नवाज़िशों में उन्हीं के दर्शन करी धन्य धन्य महसूस करते हुए यही जान लें कि यह परम सौभाग्य उन्हीं की देन है।

इस परम सत्य के दर्शन करते जायें.. अपनी पूर्ण की पूर्णता के दर्शन देकर मानो वह हमें अपने से पूर्ण आज़ाद कर देते हैं.. मगर ध्यान से देखें तो ऐसा है नहीं, क्योंकि हमारा चित्त तो उन्हीं श्री हरि चरणन् का सौदाई हो जाता है!

व्यक्त रूप में आप माँ तो प्रेरणा का स्रोत बने रहते हैं और आपके क़दम जीवन की धरोहर बन जाते हैं.. जिस धरोहर ने आत्मशुद्धि की राह दी है। जिन्होंने अपने प्रेम की पराकाष्ठा के यह अतीव अद्‌भुत दर्शन दिये हैं, जिन श्री हरि जगद्‌जननी माँ ने जीने की राह दी है, उन्हीं श्री हरि को हमारा कोटि-कोटि प्रणाम! धन्य हैं आप माँ, जो अपना आप दे कर ख़ामोश हो जाते हैं! ऐसे स्नेहासक्त हृदय को कोटि-कोटि प्रणाम!!

परम पूज्य माँ के साथ परिवार से सदस्य

आप ही हैं माँ प्रभु जी, जो जन्म जन्म से इन 'मैं' के बन्धनों से मुक्त कर करी, आप ही में टिकाव पाने की प्रक्रिया शुरु कर देते हैं। हमारे training period को विराम देकर, हमें अपनी दी राह पर चलने के द्वार खोल दिये हैं! सच तो यह है कि आप ही तो हमें चलाते हुये अपने में सुरक्षित करेंगे व अपने स्वरूप में टिका लेंगे। इसी अटूट आस्था को लेकर हम सभी को उन्हीं के शरणापन्न हो जाना चाहिए।

दृढ़ निश्चय, धीरज व अतीव प्रेम व समर्पित भाव से चलते चलें। उन्हीं के शरणापन्न हुए रहें। ऐसे सद्‌गुरु कहाँ मिलते हैं? बस यही दुआ माँगें, 'ख़ुदा करे अब के भटकें नहीं!' हर युग में मैंने ही छोड़ा होगा तभी तो जन्म-जन्म भटकते रहे। अब इस जन्म में प्रभु माँ इस वेष में पुनः अवतार ले कर हमारे लिए आये हैं, हमारा हाथ पकड़ कर सभी को इसी अपनी राह पर लिये चलते हैं.. ईश्वर करे, अब के यह हाथ न छूटे!

भगवान जी की अपार कृपा तो देखो, जो सद्‌गुरु बनी अपनी पूर्ण की पूर्णता अपने विराट स्वरूप के दर्शनों से नवाज़ रहे हैं हमें! यह तो उनके जीवन का प्रथम आश्चर्य है.. कैसे चहुँ ओर से समेट करी हमें उठा लेते हैं.. कैसा अनुपम व विलक्षण प्यार है आप जगद्‌जननी माँ का! जहाँ तक दृष्टि जाती है व उससे भी आगे, एक आप ही आप श्री हरि माँ हैं - यही परम सत्य है! इसके आगे सभी फीका लगता है। जिस अपने बड़प्पन का हम गुमान करते हैं, अपने आपको देखते हुये आत्मग्लानि से मन भर जाता है..
"त्राहिमाम-त्राहिमाम, रक्षमाम-रक्षमाम"! मन पुकार उठता है!

एक निष्काम प्रेम का स्रोत है वह जो निरन्तर बह रहा है, उन्हीं के श्री चरणन् में बैठ करी उन्हीं श्रद्धेय से गुरु के बारे में जानें क्योंकि उन्हीं की वाणी के सत्य से ही इस परम सत्य को जाना जा सकता है। श्रद्धापूर्ण मन से, अतीव प्रेम से उनके श्री चरणन् में बैठ करी उन्हीं की वाणी को सुनें जो हज़ारों तीर्थों का पुण्य अपने में समेटे हुये हैं.. वह तेरे कल्याण का मार्ग ही कहेंगे! सद्गुरु स्वयं ही गुरु की परिभाषा यानि अपना परिचय आप ही दे रहे हैं।

जीवन में उन्हीं श्री हरि की असीम कृपा का ही यह दिव्य प्रसाद है जो हम जैसों के लिए उनका आगमन होता है! आप श्री हरि माँ ही हैं, जो इस मन को जिज्ञासु बनाई साधना को प्यार से आगे से आगे बढ़ाये लिए चलते हैं.. कैसे आन्तर्मुखता का प्रसाद निरन्तर मिलने लगता है, आप श्री हरि माँ प्रभु से! आप माँ ही अपने में साधक का चित स्थिर करके आगे से आगे बढ़ाते हुये अपने ही रंग में रंगते जाते हैं। आप श्री हरि माँ की करुण-कृपा के भव्य व अनूठे दर्शन होने लगते हैं और यह जिज्ञासु मन मतवाला हुआ आपके अनुपम मनोहरी दर्शन से लालायित होता रहता है! इसके पश्चात लाख चाहने पर भी आपको भूल ही नहीं पाता!

उठते-बैठते, सोते-जागते आप ही आपके दर्शनों से मन ओत-प्रोत रहता है। ऐसे अपने परम रस को जब आप चखा देते हैं तो कैसे भूल सकता है साधक कि आपकी मेहर में क्या पा लिया है उसने! इतना रोमांचित हो जाता है.. कैसे भूल सकता है कि आपसे इसने क्या क्या पा लिया!

आप तो अपनी मेहर में निरन्तर ला रहे हैं। भले ही इसे आत्म अनुभूति कह लीजिये क्योंकि आन्तर्मुखी तो आप माँ ने इसे कर ही दिया.. मन उस आत्मतत्व का अभिलाषी हो ही गया.. भले ही यह कुछ जानता नहीं, इसे दैवी देन की भाषा तक समझ नहीं आती; मगर आप श्री हरि माँ के प्रेम का यही तो बहुत प्यारा आश्वासन है जो हृदय-आँचल आप भरे ही जा रहे हैं इसका। आत्मनिवेदन की बेला है, आज नहीं तो कल समर्पण हो ही जायेगा.. इतनी आस्था आपके प्रति हृदय में हो ही चुकी है! आप श्री हरि माँ के सिवा कुछ और देखने की लालसा आपने छोड़ी ही कहाँ हैं। आप श्री हरि माँ का कोटि-कोटि धन्यवाद!

आपकी कृपा से आपके नयनों से जैसे एक बूँद असमोर्द्ध रस की क्या पी ली जो अपना आप भूल बैठी। कैसा अनूठा अनुग्रह है इस कनीज़ पर आपका, धन्य धन्य महसूस करते हुये नतश्री बारम्बार होती हुई चरण-रज आपकी सीस चढ़ा लेती हूँ। इसके बाद कुछ और पाने की लालसा ही कहाँ रह जाती है? उफ़ तौबा, जीव में यह ताब कहाँ कि उसकी आकर्षण शक्ति को रोक सके। वह तो खेंचे ही लिए जा रही है!

क्या गाऊँ सद्गुरु प्रभु जी की महिमा? आत्मतत्व को पाये बिन ही अपने असीम अनुग्रह में यूँ भी लिए ही जा रहे हैं निरन्तर ही.. फिर आश्वासन भी दे रहे हैं कि हे साधक तूने जो आत्म तत्व पा लिया तो उस गुरु में, उस प्रभु में विलीन हो ही जायेगा।

आंतर मन में राम भाव का उठना ही गुरु भाव है। श्रद्धा-भक्ति स्वयं गुरु ही देते हैं। श्रद्धा भक्ति फिर उठ ही आती है। आंतर में उतर कर ही वह ज्ञान देती है जो साधक की साधना बढ़ती ही जाये.. मन आन्तर्मुखी हो कर उन गुरु को ही निहारे जाता है जो तुझ में बसे हैं।

गंगा की तरह पावन बहाव ही वह स्वयं हैं। जो भी इस गंगाजल का आचमन कर लेता है, गंगा का ही प्रभाव होता है वहाँ! न चाहना, न सोच विचार! वे तो निर्मम व निर्अहंकार हैं.. मान की बात तो है नहीं वहाँ, यही श्री हरि सद्गुरु के जीवन की हक़ीक़त है। गुरु की महिमा यही है कि वे समर्पण करवा ही लेते हैं। आप चाहें या न चाहें.. उसी गुरु भाव में ही एकाकार हो जाते हैं! हे मन, तू अनिकेत हुआ गुरु चरणन् में ही रह! निज की हर चाह उन्हीं श्री चरणन् में धरते हुये गुरु पूजन व गुरु सेवा ही कर.. हे साधक, तेरी निजी चाहना कोई रहे ही नहीं!

गुरु को तोलने का पैमाना शिष्य के पास कोई नहीं - वह तो सद्गुरु प्रभु जी की महिमा गा ही नहीं सकता। उनकी स्थिति को तो वह माप ही नहीं सकता। बस यूँ जानिये, जहाँ श्रद्धा उभर आती है व सीस झुक जाता है, मन प्रेमविह्वल हुआ वहाँ से उठ ही नहीं पाता.. उसे इस अवस्था में अपने तन की याद ही कहाँ रहती है.. वह तो महा आनन्द में खो जाता है! उसकी फ़रियाद में एक ही फ़रियाद रह जाती है - प्रभु मिलें बस प्रभु मिलें!

एक बार, बस एक बार गर चरण में तेरा चित टिक गया व तेरा सीस झुक गया या फिर गुरु नयनन् से गुरु ने तुझ को देख लिया तो सच जान उनको तू भुला नहीं पायेगा। वही तुझे याद आयेंगे! महाभोग भी उसके बाद नीरस ही लगेंगे तुझे.. रेखा बंधा तू भले ही कुछ पल को जी बहला भी ले, इन विषयन से संग लगा भी ले.. लेकिन गुरु की याद आते ही सब रस नीरस ही हो जाते हैं।

अपना श्रेय वहाँ नहीं नहीं, गुरु कृपा से ही तू राम राम कह पाता है। श्रद्धा सों ही पात्रता पा जाता है व गुरु हृदय में वास करते हैं, इसी श्रद्धा पलने में प्रभु रहते हैं। गुरु रूप धरी, उस गुरु में वास्तव में राम ही रहते हैं। यही सत्त्व सार मन जान ले, गुरु बिन ज्ञान नहीं होता और जब तक समर्पण न हो.. तब तक राम नहीं मिलते! अहम् का नितांत अभाव हो जाये और हर वृत्ति उन्हीं चरणन् पर परवान चढ़ जाये, तभी अपने आपको जान पायेगा।

घूँघट के उठते ही वह अपना आप हो जाते हैं। घूँघट के पट खुलते हैं जब, तो अपने आप से मुलाकात हो जाती है.. जो आपके अज्ञान आवरण को उठा देते हैं। धन्य हैं हम सभी, जो आप के साक्षात् दर्शनों का इतना दिव्य प्रसाद मिला! धन्य धन्य हो जाते हैं हम सभी! आप ईश्वर की कृपा तो देखिये, जो इस कलिकाल में आप प्रभु माँ के साक्षात् दर्शन मिले! ईश्वर करे, आपके इस अनुग्रह को हम जीवन में पूर्णतया ग्रहण करते हुये आप ही में स्थित हो जायें। आमीन! ❖

...केतीआ सुरती सेवक केते नानक अंतु न अंत!

गतांक से आगे –

पौड़ी ३५

धरम खंडका एहो धरमु।
गिआन खंड का आखहु करमु।
केते पवण पाणी वैसंतर केते कान्ह महेस।
केते बरमे घाड़ति घड़ीअहि रूप रंग के वेस।
केतीआ करम भूमि मेर केते केते धू उपदेस।
केते इंद चंद सूर केते केते मंडल देस।
केते सिध बुध नाथ केते केते देवी वेस।
केते देव दानव मुनि केते केते रतन समुंद।
केतीआ खाणी केतीआ बाणी केते पात नरिंद।
केतीआ सुरती सेवक केते नानक अंतु न अंतु।।३५।।

शब्दार्थ : (जो ऊपर कहा गया है) यही धर्म खण्ड का धर्म है। अब ज्ञान खंड का कर्तव्य कहता हूँ। वहाँ कितने ही वायु, जल तथा अग्नियाँ हैं, कितने ही कृष्ण तथा शिव हैं, कितने ही ब्रह्मा रचना रच रहे हैं, अनेक रूपों, रंगों तथा वेषों की कर्म भूमियाँ हैं, अनेक सुमेरु पर्वत हैं, कितने ही धर्म के उपदेश कर्ता हैं। कितने ही इन्द्र, चन्द्र और सूर्य हैं। कितने ही देशों के मण्डल (द्वीप) हैं। कितने ही सिद्ध, बुद्ध तथा कितने ही नाथ हैं। कितने ही देवियों के रूप हैं। अनेक ही देवता, दानव और मुनि हैं और अनेक रत्नों के समुद्र हैं। अनेक जीवों की खाणियाँ (योनियाँ), अनेक बाणियाँ और कितने ही राजाओं की पातशाहीयें हैं। अनेक वेद श्रुतियाँ और कितने ही सेवक हैं। हे नानक! उस के अन्त का अन्त नहीं है अर्थात् वह अनन्त है।

पूज्य माँ :

धर्म की बातें कह चुके, अब ज्ञान की बातें कहते हैं।
अनन्त रूप पंच तत्व के, जल पवन अग्न ही कहते हैं।।१।।

अनन्त कृष्ण अवतारी पुरुष, अनन्त शिव शंकर स्वरूप।
अनन्त ब्रह्मा ने रूप धरे, अखण्ड रूप परम स्वरूप।।२।।

अनन्त कर्म भूमि स्थल जानो, अखण्ड भक्त आदेश रूप।
अनन्त इन्द्र चन्द्र और सूरज, अखण्ड लोक अखण्ड रूप।।३।।

अनन्त सिद्धि बुद्धिवान भी, अनाथ नाथ बहु रूप।
अनन्त देवी देव अनन्त, अनन्त मुनि दानव रूप।।४।।

अनन्त रत्न समुद्र के आन्तर, अनन्त खान ज़बान के रूप।
अनन्त नरेन्द्र शाह अनन्त, बहु ज्ञानी बहु चाकर रूप।।५।।

अनन्त ज्ञान के चाकर मनुवा, अनन्त परम महा रूप।
अखण्ड दिव्य तत्व वह एको, एको वह परम स्वरूप।।६।।

यह ज्ञान की बातें सुन लीं मालिक, नानक ज्ञान तो जान लिया।
सब तू है हर रूप तेरा, अनन्त है वह भी मान लिया।।७।।

अनन्त में अनन्त है तू, ससीम असीम तू जान लिया।
पर 'मैं' इक कण भर भी नहीं, यह जान के यह भी जान लिया।।८।।

अखण्ड तू मेरे मालिका, एक तू इक ओंकार।
अद्वैत तत्व बस एको तू, हर नाम रूप तू मालिका।।९।।

यह ज्ञान मिला मुझे बार बार, और तुझसे मिला मुझे मालिका।
पर मैं भी तो तेरा वंश ही हूँ, तेरा अंश ही हूँ मेरे मालिका।।१०।।

यहाँ 'मैं' का कोई काम नहीं, सब तू है तू मेरे मालिका।
ख़ुदावन्द तू मेरा साहिब तू, मेरा मालिक तू मेरे नानका।।११।।

अज फिर बन्दगी कर के तुझे, फिर से तेरी अर्ज़ करूँ।
चरण पड़ी के कर जोड़ी, पुनि पुनि मैं तुझे कहूँ।।१२।।

कर्म की बातें सुझा करी, तुम क्या कहो न समझ सकूँ।
अब ज्ञान की बातें कही करी, तेरा हुक्म चले इतना ही कहूँ।।१३।।

तेरे हुक्म रज़ा में मैं चलूँ, हुक्म अदूली नहीं करूँ।
तेरे चरण में बैठ करी, मैं नानक नानक नित्य कहूँ।।१४।।

हर कर्म के राही मेरे मालिका, तेरा नाम ही कहा करूँ।
रोम रोम राही नानक, मैं तो नानक नानक कहा करूँ।।१५।।

सब है तू तूने कहा, मैं तुझको ही देखा करूँ।
जो भी आये सामने, तेरा रूप वहाँ देखा करूँ।।१६।।

अनन्त तू अखण्ड तू, सब है तू देखा करूँ।
जो हुक्म तूने मुझे दिया, वह हुक्म तेरा देखा करूँ।।१७।।

बस इतनी इनायत हो जाये, तेरी मेहर गर हो जाये।
ओ मेहरबान तेरे दर आये, अब तेरी नज़र ही हो जाये।।१८।।

मैं पेश चरण में क्या करूँ, जो है तेरा तुझे क्या मैं दूँ।
'मैं' को अब भुला ही दे, ज़र्रा बन तेरे चरण रहूँ।।१९।।

तेरे नाम की महिमा जो सब, अब वह नित देखा करूँ।
जलवा तेरा परवरदिगार, हर जा पर देखा करूँ।।२०।।

मुझे तुझसे कुछ भी पाना नहीं, इस 'मैं' को कुछ भी न देना।
'मैं' का नामोनिशां न रहे, वहाँ अपना नाम ही धर देना।।२१।।

जहाँ तेरा नाम था मालिका, वहाँ 'मैं' ने नाम अपना भरा।
'मैं' ने तो बहु बुरा किया, पर तेरे करम की है इल्तिजा।।२२।।

हे मालिका ओ मालिका, मेरे नानका ओ नानका।
तेरे दर पड़ी के यही कहा, अब शरण मुझे दे जा।।२३।।

श्रीमती देवी वासवानीः क्या विराट का मतलब और कुछ नहीं, यही है?

पूज्य माँ : गर भगवान ने कहा सब वह ही है, तो उसे तोड़ तोड़ कर क्या करना? उसमें और ज्ञान भर के, और अर्थ डालकर, और खाल उधेड़ कर क्या करना? भगवान ने कहा अखण्ड वही है।

हमने कहा, 'आपने कहा तो आपके आदेश के सामने हम सीस झुकाते हैं। आपने कहा, 'सीस मेरा नहीं,' फिर यह आपका ही है, तो इसे ले लीजिये, हम सीस झुका देते हैं। फिर हमें क्या ज़रूरत है देखने की, कि कितने कृष्ण हैं.. कितने चंद्र हैं.. कितने शंकर हैं.. कितने दानव आते हैं.. कितने मुनि आते हैं? आपने यह सब बता कर यही बताया कि सब आप हैं, और मैं नाचीज़ हूँ।

अब मेरे ऊपर जो थोड़ा सा अहं का पर्दा रह गया है, वह भी उतार देना चाहते हैं। उसे उतार कर आप यही कहना चाहते हैं कि मैं धोखेबाज़ हूँ, बेईमान हूँ, मूर्ख हूँ, बेअदब हूँ, मैं तेरे हज़ूर में आकर' 'मैं, मैं' करती हूँ! आप ने कहा, मैंने मान लिया। बस अब तो इतना सा तक़ाज़ा है, अब इतनी सी मेहर हो जाये - जो आपने कहा कि मैं हूँ ही नहीं, यह बात सलामत हो जाये! यह बात हक़ीक़त बन जाये! यह आपका हुक्म मैं अपने सीस पे धर के अपना नाम, धाम, रूप, सब भूल जाऊँ, क्योंकि वह मेरे नहीं.. तुम्हारे हैं।

इस सारे ज्ञान को पढ़ कर कुछ न होगा। ज्ञान की हर जीत से, मुझे कुछ समझ न आएगा। कर्म मैंने ठीक किये, या ग़लत किये, मैं कुछ नहीं जानती। मैं तो इतना जानती हूँ कि आपने ही कहा है कि न मेरा रूप, धाम, कुछ भी नहीं! यही कहना चाह रहे हो न?

हे नानक सब कहकर तू कहो, मेरा नाम रूप है कोई नहीं।
धरती है सराय यह, वहाँ 'मैं' का धाम है कोई नहीं।।१।।

कुछ पल का 'मैं' बुलबुला, बुलबुला भी आप है कोई नहीं।
पानी का है बुलबुला, बिन पानी के वहाँ कोई नहीं।।२।।

कुछ पल का मेरा साथ है, वहाँ साथ भी मेरा कोई नहीं।
कुछ मिलन हुआ बिछुड़न भी हुआ, वहाँ मिलन बिछुड़न कोई नहीं।।३।।

तूने कह जो दिया मैंने मान लिया, मालिक 'मैं' ही यहाँ कोई नहीं।
जो है सब कुछ तू ही है, और यहाँ पे कोई नहीं।।४।।

- क्रमशः

दिव्य जीवन...

पूज्य छोटे माँ द्वारा संकलित

यज्ञ, तप, दान तो सुख का आधार हैं!

परम पूज्य माँ का जीवन प्राणी मात्र के लिये परम दिव्य प्रसाद है!

मुझे इस जीवन में राम जी की कृपा से उनके साथ रहने एवं उस प्रसाद को ग्रहण करने का सौभाग्य मिला है, जिसे लेखनीबद्ध करना भी अतीव कठिन कार्य है.. परन्तु उस प्रसाद को वर्णित करने की अभिलाषा मुझे बारम्बार प्रेरित करती है।
हे राम, आप ही साक्षी बन कर मेरी सहायता करें!

परम पूज्य माँ के जीवन के हर कर्म में दिव्यता के दर्शन होते हैं। गीता में जो भी स्थितप्रज्ञ, स्थिरबुद्धि के लक्षण कहे हैं, परम पूज्य माँ का जीवन उन सब से तोला जा सकता है। निष्काम प्रेम, निष्काम कर्म, अपने लिए कहीं पर कुछ भी न पाने की चाह ही उनका जीवन था।

ऐसे नित्य समाधिस्थ लोग अपने जीवन में दैवी गुणों का निरन्तर अभ्यास करते हैं। लोगों के हर काज को निष्काम भाव से दक्षतापूर्वक करते हुए, औरों को स्थापित करने के लिए प्रयत्नरत रहते हैं। सब कुछ करते हुए भी वह किसी पर एहसान नहीं करते। जैसा भी काम उन्हें मिल जाये, उसे वह अतीव दक्षता से करते हैं।

शास्त्र प्रतिपादित ज्ञान को जीवन में अपनाना - 'तू जग का है, जग तेरा नहीं। हर स्थिति में जग से कुछ चाहना नहीं। किसी पर कोई हक़ नहीं, परन्तु तुम पर सब का हक़ है।' वह ज्ञानस्वरूप दूसरों की स्थिति पर उतरते हैं व दूसरों के काज करते हुए और उनसे काज करवाते हुए उन्हीं का कल्याण करते हैं।

ऐसे दिव्य व्यक्ति को पहचान पाना कठिन है। वह अपने स्वरूप के प्रति नित्य मौन रहते हैं और जो उनके सामने आये उसके तद्रूप हो कर उनके काज करते हैं।

परम पूज्य माँ ने अपने जीवन के प्रत्येक स्तर पर दिया ही दिया है.. वे अकसर कहा करते थे, "आपका दाहिना हाथ क्या कर रहा है, बाँयें हाथ को इसकी खबर भी नहीं होनी चाहिए।" उन्होंने इसी भाव से ही अपना जीवन जिया। कुछ कहानियाँ परम पूज्य माँ के विषय में तब पता चलीं, जब लोगों ने ही आकर बतलाया.. अन्यथा पूज्य माँ ने किस ढंग से किसी की कब सहायता करी, उसकी खबर उनके आसपास रहने वालों को भी नहीं होती थी! यही उनका भाव होता था -

'उसको भेजा राम ने, मुझे राम ही मिल गया!'

यज्ञदानतपःकर्म न त्याज्यं कार्यमेव तत्।
यज्ञो दानं तपश्चैव पावनानि मनीषिणाम्।।५।। - *श्रीमद्भगवद्गीता*

गीता में भगवान कहते हैं, 'यज्ञ, तप, दान तो सुख का आधार हैं। ये ही जीवन में इनसानियत के चिह्न हैं। ये पावन करने वाले हैं, यही तो पावनता का चिह्न हैं। परन्तु ये यज्ञ, तप, दान भी संग और फल का त्याग करके करने योग्य हैं।'

यह बात उन दिनों की है - परम पूज्य माँ के पास एक दिन एक बालक उनके घर आया और कहने लगा, "मेरी माँ की मृत्यु हो गई है। मुझे कफ़न के लिये एवं अन्य ख़र्च के लिये पैसे चाहिए।"

पूज्य माँ ने अपने P.A. (सैक्रेटरी) को उसके घर भेजा और कहा, "जाओ और देखो, यह बालक जो बात कह रहा है उसमें कितनी सत्यता है। यदि यह सच है तो उन्हें सब ख़र्च देकर जो भी काम होना है, सब करवा देना।"

उस अफ़सर ने जब बालक के घर जाकर देखा तो पता चला कि वह तो झूठ बोल रहा था.. यह सत्यता तो थी ही नहीं! इसके पश्चात् पूज्य माँ की उसके घर वालों से एवं उसकी माता जी से बातचीत होने लगी। उस बालक के लिये एक छोटा सा काज ढूँढा गया जिसे वह कर सके। उसकी बहिन और माता जी को भी काम दिये गये। बहुत वर्षों तक पूज्य माँ उनकी आर्थिक सहायता करते रहे, जब तक वह अपने पाँव पर खड़े नहीं हो गये।

माँ सत्य ही कहते हैं कि उनका स्वभाव किसी को भी छोड़ना नहीं है! दूसरा ही छोड़ देता है। जब तक उसे आवश्यकता होती है वह साथ रहता है; परन्तु जब उसका काम निकल जाता

है, जब उसको आवश्यकता नहीं रहती तो वह पीछे हट जाता है। परन्तु जब भी किसी को, किसी भी प्रकार की आवश्यकता होती है, पूज्य माँ उसके लिए वैसा ही प्रबंध कर देते हैं।

बहुत वर्षों तक वह बालक और उसकी माताजी मिल कर धूप व अगरबत्तियाँ बना कर बेचा करते थे, जिसे पूज्य माँ स्वयं ही ख़रीद भी लिया करते थे। उसकी बहिन के लिये भी कोई न कोई काज निकाल लेते थे ताकि उनके परिवार का निर्वाह होता रहे। बाद में उसकी बहिन की शादी भी करवा दी और उसके लिये जो कुछ भी कर सकते थे, सब किया। जब वह इस योग्य हो गये और उन्हें कोई आवश्यकता न रही, तो उसके बाद वह सहायता लेने नहीं आये।

इसके कई वर्षों के बाद पूज्य माँ को डलहौज़ी में एक परिवार मिलने आया और उन्होंने पूज्य माँ का धन्यवाद किया एवं बतलाया कि किस प्रकार से उनकी बहन को आर्थिक आवश्यकता थी जो परम पूज्य माँ ने पूरी कर दी थी। यह वही परिवार था।

पूज्य माँ के द्वार तो मानो भगवान के द्वार हैं जो सदैव सबके लिये खुले हैं। पूज्य माँ ने कभी किसी को छोड़ा हो ऐसा कभी नहीं हुआ।

इसी प्रकार पूज्य माँ के जीवन में जहाँ पर भी ध्यान दें उनका एक निराला ही ढंग दीखता है। उन्हें देख कर आश्चर्य भी होता है और यह भी पता चलता है कि परिस्थिति को देखने का ढंग तो वास्तव में यही है।

एक बार की बात है जब पूज्य माँ पंजाब युनिवर्सिटी में खेल विभाग की निर्देशिका के पद पर आसीन थीं। उस समय पूज्य माँ की एक छात्रा आस्ट्रेलिया में Match खेलने जा रही थी।

परन्तु उसके पास पर्याप्त मात्र में पैसे नहीं थे। उस लड़की ने पूज्य माँ से अपनी परिस्थिति की विवशता बताई। पूज्य माँ का यही ख़्याल था कि पाँच-दस जानने वाले धनी लोगों से donation माँगेंगे और उस छात्रा को ऑस्ट्रेलिया भिजवा देंगे। परन्तु जब वास्तविक परिस्थिति सम्मुख आई तो उसका निराला ही रूप देखने को मिला। पूज्य माँ जिनके पास सर्वप्रथम गये वह एक अच्छे धनाढ्य व्यक्ति थे। पूज्य माँ का ख़्याल था कि उनसे प्रचुर मात्रा में धन मिल जायेगा। परन्तु जब उन्होंने पैसे पकड़ाये तो पूज्य माँ देखते ही रह गये। उसी समय यह सोचा कि यदि इसी प्रकार से माँगने लगे तो जाने की तिथि तक भी पैसे इकट्ठे नहीं होंगे इसलिये अच्छा तो यही है कि दूसरा ढंग सोचा जाये।

पूज्य माँ ने university से अपनी ६ मास की तनख़ाह निकलवायी और उस लड़की को ऑस्ट्रेलिया भिजवा दिया। उन्होंने एक बार भी यह नहीं सोचा कि मेरा क्या बनेगा! इसकी तो उन्हें कभी याद ही नहीं आई। बस भाव उठा और कर्मों में परिणत हो गया। यदि वहाँ पर मैं होती तो इसके विषय में विचार करती कि 'मैं यह क्यों करूँ? मेरा क्या बनेगा?'

इसके पश्चात् जितने भी नौकर थे, उन्हें यह कह दिया कि मैं कुछ देर के लिये स्वयं खाना बनाने का अभ्यास कर रही हूँ और उन्हें भी छुट्टी कर दी। उन दिनों जालंधर में ढाबे पर एक आने का एक फुलका मिलता था और दाल साथ में मुफ़्त मिलती थी। सो प्रातः ४ फुलके मंगवा कर दो पूज्य माँ खाते और दो अपने कुत्ते को खिलाते। इस प्रकार ४ फुलके प्रातः और ४ फुलके साँझ को मंगवाये जाते। इस तरह प्रतिदिन ८ आने के खाने में काम चलने लगा। यह व्यवस्था कई महीनों तक चलती रही।

इस बात का राज़ तो तब खुला जब एक दिन अचानक उनके पिता जी आ गये और खाना बाहर से मंगवाया गया। तब पिता जी के पूछने पर उन्हें उस घटना की जानकारी हुई। यह सब सुनकर वह अचम्भित रह गये। वह पूज्य माँ के गुणों से परिचित तो थे परन्तु पूज्य माँ किसी की भी सहायता करने में इतनी दूर तक जायेंगे, ऐसा वह सोच भी नहीं सकते थे। ऐसा कार्य तो बड़े बड़े धीर वीर पुरुषों के लिये भी असम्भव हो जाता है। ❖

सब रेखा तो पूजा क्यों?

पिता जी

यदि संसार चक्र कर्मगति के विधान पर चल रहा है तो पूजा का क्या लाभ होगा? जो पाप किये हैं वह तो अवश्य फल लायेंगे। साधक कैसी उपासना करे?

सारांश

जब तक साधक में अहंकार है और वह रेखा में पूर्णतया नहीं मानता, तब तक रेखा का नाम लेना झूठ का आसरा लेना है। सर्वप्रथम साधक अपने स्थूल संसार तथा अपने को मिले अपमान और विरुद्धता को भागवत देन जाने, उसे रेखा का खिलवाड़ मानने का अभ्यास करे। जब तक अहं है, पूजा अनिवार्य है। साधक को अहं जनित मनोविकार के मिटाव के लिये पूजा तथा सत् उपासना करनी ही चाहिये।

प्रश्न अर्पण

संसार चक्र है चल रहा, कर्म चक्र चलता जाये।
कर्म बीज निश्चित फूटे, विधान चक्र चलता जाये।।१।।

तो पूजा किये क्या होगा, पाप विमुक्त न हो पायें।
कैसी पूजा अब हम करें, जो कर्म चक्र से उठ जायें।।२।।

तत्व ज्ञान

साधक रेखा का नाम न ले, पथ वह भूल ही जायेगा।
कर्ता निज को जब माने, रेखा को समझ क्या पायेगा।।३।।

अहंकार मम मोह भरा, मिथ्यात्व में मन है टिका हुआ।
रुचिकर तो वह ख़ुद करे, कर्त्तव्य त्यजी कहे रेखा किया।।४।।

स्थितप्रज्ञ वह हुआ नहीं, बुद्धिमान निज को माने।
दम्भी दर्प में पड़ा हुआ, रेखा की वह क्या जाने।।५।।

तनत्व भाव जीवत्व भाव, भोक्तृत्व भाव जहाँ पे है।
रेखा की वह बात करे, यह केवल अनृत ही है।।६।।

या कर्मकर्ता जीव है, या केवल ब्रह्म वह हो सके।
विधान या रेखा कौन कहे, जिस पल ब्रह्म ही रह जाये।।७।।

अन्य सभी कुछ स्वयं करो, कहो नहीं करूँ तो कस होये।
बहु चेष्टा बहु यत्न करो, रुचि पूर्ण तव हो जाये।।८।।

मन में दया धर्म नहीं, परम गुण का इक कण नहीं।
यथार्थ सत् भी न समझे, जाने सत्यता मन में नहीं।।९।।

अब अपना आन्तर देख लो, बुद्धि मन को देख लो।
शास्त्र को तुला बनाये करी, ख़ुद को तो अब देख लो।।१०।।

मिथ्यात्व त्याग को पूजन हो, मनोलोक निज देख लो।
अवास्तविकता में रमण मिटे, इस कारण ही पूजन हो।।११।।

काम क्रोध मद लोभ देख, प्रमाद अज्ञान निज दम्भ देख।
तृष्णा मोह और काम देख, अशुद्ध आचरण अधर्म देख।।१२।।

परम के गुण ही पाने को, साधक पूजा करता है।
निज मोह अहं मिटाने को, सत् में चित्त वह धरता है।।१३।।

ज्ञान पाये फिर मनन करे, फिर वह ही होना चाहे है।
परम गुण है महा धन, धनाढ्य वह होना चाहे है।।१४।।

जो जग दे भला बुरा कहे, तब चाहे रेखा कह दे।
जब तू आप ही दुष्ट भये, रेखा का क्यों फिर नाम ले।।१५।।

सत् ही है पूर्ण जग यह, कर्म चक्र है चल रहा।
गुण गुणन् में वर्त रहे, विधान चक्र है चल रहा।।१६।।

पर दैवी सम्पदा तुझमें नहीं, अहं भी तव गई नहीं।
कर्ता तू भोक्ता भी तू, बुद्धि भी स्थिर अभी हुई नहीं।।१७।।

उस महा हक़ीक़त को साधक, तब ही जान वह पायेगा।
मिथ्यात्व त्यजी के आपुनो, जब सत् में वह टिक जायेगा।।१८।।

पाप कर्म से डर करके, फल से साधक नहीं डरे।
सत्त्व स्थिति वह चाहे है, जो मिले मिले सो मिला करे।।१९।।

ज्ञान-विज्ञान सहित

पूजन इस कारण करी, मन मेरे तुम समझ लो।
सिद्धि असिद्धि संग मिटे, योग स्थिति का साधन हो।।२०।।

आंतर जाई के आपुनो, अपने आप को देख लो।
मन में क्या बुद्धि में क्या, तन में क्या है देख तो लो।।२१।।

तनो स्थापना कारणा, या मनो स्थापना कारणा।
उचित अनुचित भूल गये, फिर भूली आपुनो धारणा।।२२।।

अनेकों प्रण तुम कहीं करो, सत्य चाही तुम चाहे कहो।
पर याद नहीं रह पाता है, सुख जहाँ नहीं देख सको।।२३।।

मिथ्यात्व त्याग को पूजा करें, कहें सत् जीवन में रह जाये।
मूल तत्व जीवन सारांश, परम समान ही हो जाये।।२४।।

बिन सत्य को पुकारे मना, सत् समझ ही न आये।
साचो तोरी पुकार भये, तब ही घूँघट खुल पाये।।२५।।

पुकार नहीं पर समझ हो, सत् तब मिल नहीं पाता है।
लाख ज्ञान हो शब्दन् में, विवेक खुल नहीं पाता है।।२६।।

गर प्रेमपूर्ण पुकार हो, तोरा संग वहाँ पे हो जाये।
ज्ञान विज्ञान का रूप धरे, तो प्रेम स्वतः ही हो जाये।।२७।।

जो सत् हो वह ही होयेगा, झुकाव भी आ वहाँ जायेगा।
ज्ञान जान कर मान लिया, स्वतः अहं मिटाव हो जायेगा।।२८।।

हो संग वहाँ तब ही यह हो, साथ पुकार भी हो जाये।
गर रुचि न हो उस सत्त्व में, महाज्ञानी भी कुछ न पाये।।२९।।

सामने आपुनो देख करी, सत् को सत् गर न मानो।
प्रमाण मिले बहु बार तुझे, फिर भी सत् उसे न मानो।।३०।।

गर साचो लग्न तोरी हुई, पुकार तो उठ ही आयेगी।
जितना प्रेम तेरा बढ़ गया, सम तुल साधना हो जायेगी।।३१।।

वहाँ ज्ञान भी हो भक्ति भी हो, श्रद्धा भी गर उठ आये।
मैं रहूँ न रहूँ बस सत्त्व रहे, इतना ही तब मन चाहे।।३२।।

राम पुकार है गुण पुकार, गुण विस्तार ही ज्ञान है।
भक्तिपूर्ण हो तेरा भाव, साकार भये तव ज्ञान है।।३३।।

साचो लग्न गर हो जाये, एक पुकार ही रह जाये।
मोरे हृदय में राम बसें, बस एको चाह तब रह जाये।।३४।।

साचो हृदय से पुकारे उसे, हर वृत्ति उसे ही पुकारेगी।
हर वृत्ति वा चरण पड़ी, तब उस को ही निहारेगी।।३५।।

आंतर की यह बातें हैं, पूजा आंतर शुद्ध करे।
विधान चक्र जो चल रहा, उससों वह कुछ नहीं कहे।।३६।।

काम क्रोध संग अहंकार, उपासना राही मिट जायें।
उपासना ही है एक राह, साक्षी राम जो बन पायें।।३७।।

भोक्तृत्व भाव कर्तृत्व भाव, आंतर की यह बात है।
मन बुद्धि चित्त अहंकार, अव्यक्त ही यह बात है।।३८।।

अहं की जा पर राम बसें, वहाँ कौन बसा और कौन गया।
व्यक्त में कुछ भी नहीं हुआ, जीवन सारा बदल गया।।३९।।

मन जा लय हुआ बुद्धि में, हर वृत्ति चाकर भई।
'मैं' मिली जा राम में, अव्यक्त ही यह बात हुई।।४०।।

स्थूल की रेखा वही रही, आंतरिक जग अब बदल गया।
कृष्ण पक्ष अंधियारा था, उजियारा वहाँ होने लगा।।४१।।

द्वंद्व गये उद्विग्नता भी, बाक़ी आनंद ही रह गया।
मन बुद्धि जब शांत हुए, बाक़ी राम ही रह गया।।४२।।

२३.१.१९६७

जग को सुन्दर बनाने के यत्न करें,
लौट कर यहीं पे आना है..

महाभारत के युद्ध के उपरांत युधिष्ठर को सिंहासन पर बैठ कर, श्री कृष्ण आगन्तुकों के चरण धोते हुए...

महाभारत के युद्ध से पूर्व अर्जुन अपने ही गुरुजन, सगे संबन्धी व नाते-बन्धुओं को सामने देख कर भयभीत हो उठा और धनुष छोड़ कर रथ के पिछले कक्ष में जा बैठा व श्री कृष्ण से कहने लगा, "हे गोविन्द! अपने पूजनीय गुरुजन को देख कर, कृपणता के दोष से मेरा स्वभाव आवृत हो गया है। सम्पूर्ण राज्य का आधिपत्य पा कर भी मैं क्या करूँगा..? ***मैं युद्ध नहीं करूँगा!"***

भगवान ने मुसकुरा कर अर्जुन से कहा -

अशोच्यानन्वशोचस्त्वं प्रज्ञावादांश्च भाषसे।
गतासूनगतासूंश्च नानुशोचन्ति पण्डिताः।।११।।

श्रीमद्भगवद्गीता २/११

शब्दार्थ :

१. जो न शोक करने योग्य हैं,
२. तू उनका शोक करता है
३. और पण्डितों के से वचन कहता है।
४. पण्डितगण, जो मर गये हैं, उन प्राणियों के लिये
५. और जिनके प्राण नहीं गये,
६. उनके लिये भी शोक नहीं करते।

तत्व विस्तार :

भगवान अर्जुन को कहते हैं :

'पण्डितों जैसी बातें करता है, परन्तु तू है मूर्ख ही। क्या तुझे इतना भी नहीं मालूम कि पण्डितगण मृत्यु की परवाह नहीं करते? जो मर गये हैं और जो जीवित भी हैं, उनका भी शोक नहीं करते।'

क्योंकि :

१. जिसका जन्म हुआ है वह निश्चित ही मृत्यु को पायेगा।
२. तन मृत्युधर्मा है, नश्वर का नाश होगा ही।
३. पंचन् कृत् तन पुनः पंचभूतन् में मिल जायेगा ही।
४. निश्चित पर क्या रोना और क्या शोक करना?
५. अनादि सिद्ध मृत्यु से क्या डरना? वह तो आयेगी ही।
६. जो तुम्हारे वश में नहीं उस मृत्यु से क्या डरना?
७. जन्म भी जीव के हाथ में नहीं होता।
८. मृत्यु भी तो जीव के हाथ में नहीं है।
९. विवेकी पण्डित उत्पत्ति तथा लय पर वृथा शोक नहीं करते।
१०. आयु भी तो किसी की निश्चित नहीं होती। जो आज है, कौन जाने कल रहेगा भी या मर जायेगा?

फिर मानो भगवान ने अर्जुन से कहा कि तू अपने आपको पण्डित कहता है, अपनी स्थिति तो देख ले :

क) ज्यों ही जटिल समस्या आई, तुम घबरा गये।
ख) ज्यों ही संकट का समय आया, तेरी बुद्धि विभ्रान्त हो गई।
ग) ज्यों ही तुम्हारे सम्मुख तुम्हारे नाते-बन्धु आये, तुम्हारा मोह जाग उठा और तुम किम्कर्तव्य-विमूढ़ हो गये। अपने नाते-बन्धुओं को देख कर तुम अपना धर्म, स्वभाव, ज्ञान और कर्तव्य, सब भूल गये।
घ) विपरीत परिस्थितियाँ सामने आईं तो मन विपरीत और द्वन्द्वपूर्ण हो गया। मन में उद्विग्नता उठ आई।
ङ) मान्यता के विरुद्ध क़दम धरना पड़ा तो तुम्हारी बुद्धि ने साथ छोड़ दिया।
च) अपनी न्यूनता छुपाने के लिये तुम ज्ञान को भी ग़लत अर्थ देने लगे।
छ) आज तुम्हारा ज्ञान जीवन में तुम्हारे काम नहीं आ रहा।
ज) पण्डितगण तो नित्य अप्रभावित रहते हैं और तू अपने बन्धुओं से प्रभावित होकर रणभूमि से ही भागने लगा है। यह तेरा कैसा ज्ञान है।
झ) तुझे पितामह और गुरु के तन से संग हो गया है, तू क्यों नहीं उनके गुणों को देखता?
ण) तू मोह के कारण अंधा हो गया है और वास्तविकता नहीं देख रहा।
त) तुम्हारा मन इतना भ्रमित हो गया है कि तू उचित तथा अनुचित का भेद भी नहीं देख रहा!
थ) तुम्हारी बुद्धि इतनी प्रभावित हो गई है कि आज तुझे सत् और असत् में भेद ही नहीं दीख रहा।
द) अज्ञानता के कारण तुम्हारे सम्पूर्ण अंग शिथिल पड़ गये हैं।
ध) अज्ञानता के कारण तुम्हारा धैर्य और वीरता सब लुप्त हो गये हैं। आज तू मृत्यु से भी डर रहा है।

क्या यह पण्डितों जैसी बातें हैं? तुझे पण्डित कहना मूर्खता है। मानो भगवान कह रहे हों :

'नाहक पण्डिताई न दिखा, अपने आपको जान तो ले! जब तू अपनी स्थिति

जान लेगा, तत्पश्चात् चाहे तुझे ज्ञान का जीवन में यथार्थ अर्थ समझ आ जाये, वरना तेरे लिये इस समय सच समझना कठिन है।'

साधक की भूल

नन्हीं! साधक लोग भी जीवन में यह भूल कर जाते हैं।

१. उन्हें ज्ञान का बहुत गुमान हो जाता है।
२. वे अपनी वाक्-पटुता में भरमा जाते हैं।
३. वे अपने ही गुणों पर गुमान कर लेते हैं।
४. वे अपने आपको श्रेष्ठ मानने लग जाते हैं।
५. जब कोई विपरीत परिस्थिति आ जाये तो वे उससे भाग जाते हैं और ज्ञान का अर्थ बदल कर अपने आपको ठीक सिद्ध करने की कोशिश करते हैं।
६. वे जब कर्तव्य का भी त्याग करते हैं, तब भी बहाने लगाते हैं।

भाई! बात असल में यह है कि अपने आपको ठीक सिद्ध करना ही होता है वरना जीना कठिन हो जाता है।

वैसे नन्हीं लाडली!

१. जीव तो भगवान को भी ज्ञान सुनाता है।
२. जीव तो भगवान को भी धोखा देना चाहता है।

पण्डित तो वे हैं, जो जीवन-मृत्यु की परवाह नहीं करते। जो जीवित या मृतकों से प्रभावित नहीं होते। यानि जो न्याय के पुजारी हैं, जो राम के पुजारी है, वे इनसान के नहीं, भागवद् गुणों के चाकर होते हैं। वे पण्डितगण मृत्यु या जन्म का शोक कभी नहीं करते।

न त्वेवाहं जातु नासं न त्वं नेमे जनाधिपाः।
न चैव न भविष्यामाः सर्वे वयमतः परम्।।१२।।

श्रीमद्भगवद्गीता २/१२

भगवान अर्जुन को आत्मा की नित्यता समझाते हुए कहते हैं :

शब्दार्थ :

१. न तो ऐसा ही है कि मैं पहले नहीं था,
२. या तू नहीं था, या ये राजा लोग नहीं थे
३. और न ऐसा ही है कि,
४. इससे आगे हम नहीं होंगे।

तत्व विस्तार :

भगवान कहते हैं कि हम सब पहले भी थे, आज भी हैं और आगे भी रहेंगे।

भगवान यहाँ आत्मा के अमरत्व की बात समझाते हुए कह रहे हैं कि :

१. आत्मा का कभी नाश नहीं होता।
२. आत्मा नित्य है, यह हमेशा था और हमेशा रहेगा।

३. यह पुरातन है और आदिकाल से है।
४. यह अक्षय है; बढ़ता और कम नहीं होता।
५. यह अक्षर है; यह नित्य एकरूप है।

भगवान मानो कह रहे हैं, कि अर्जुन!

क) तन तो मिट जाता है, यह तो निश्चित बात है। इस पर शोक करना व्यर्थ है।
ख) तन मरणधर्मा है, इसे मरने से कौन रोक सकता है?
ग) किन्तु न तू मरता है और न ही तेरे सम्मुख खड़े हुए इन राजा लोगों का भी नाश होता है। यह आत्मा नित्य है, अमर है।
घ) तन बार बार उपजता है; कर्मों के बीज पुनः पुनः जन्म लेते हैं और अपनी अवधि, या कहूँ निश्चित आयु पूरी होने के बाद यह तन पुनः मिट्टी बन जाता है।
१. जब यह सब होता ही है, तो शोक क्यों करना?
२. फिर आत्मा तो अमर ही है, शोक क्यों करना?
३. जब यह आत्मा अमर है और पुनः पुनः जन्म लेता है तब तो यह समझ लेना चाहिये कि तन रूपा सवारी पल-पल पर बदलती रहती है। सवारी से संग नहीं करना चाहिये।

मानो भगवान कह रहे हैं :

क) मरने जीने की बात सोच कर मत घबरा।
ख) विजय-पराजय का भी तू ध्यान न कर।
ग) अपने व्यर्थ के भय का तू त्याग कर दे।
घ) यह तो तुम्हारा मोह उठ आया है, यह मूर्खता है।
ङ) ज्ञानवान पण्डित लोग जीवन या मृत्यु का शोक नहीं करते।
च) जो सामने खड़े हैं, उन्हें न देख, अपना कर्तव्य निभा।
छ) तन से तेरा क्या नाता है? जो भी नाता है, उस नाते को अपने कर्तव्य की राहों में न आने दे।
ज) यह आज जो तेरे नाते-रिश्ते हैं, कल जाने यह कौन सा रूप धरेंगे? यह तो अनित्य ही थे और अनित्य ही रहेंगे। हर जन्म में कोई और कुल होगा; कोई और नाम होगा इनका। तू इनमें न भरमा और अपना कर्तव्य कर।

तू मृत्यु से न घबरा, मृत्यु का भय निरर्थक है। जो नित्य है, उसकी मृत्यु होती ही नहीं तो फिर अनित्य की मृत्यु पर शोक कैसा? पण्डित लोग यह जानते हुए मृत्यु का शोक नहीं करते। पण्डितगण तो जन्म-मरण के खिलवाड़ को दूर से देख कर नित्य अविचलित, निर्भय, निर्द्वन्द्व और निर्लिप्त रहते हैं।

देहिनोऽस्मिन्यथा देहे कौमारं यौवनं जरा।
तथा देहान्तरप्राप्तिर्धीरस्तत्र न मुह्यति।।१३।।

श्रीमद्भगवद्गीता २/१३

भगवान पुनः आत्मा की नित्यता तथा तन की नश्वरता की बात कहते हैं :

शब्दार्थ :

१. जैसे देही को इस देह में,

२. **लड़कपन, जवानी और वृद्धावस्था प्राप्त होती है,**
३. **वैसे ही उसको दूसरे शरीर की प्राप्ति भी होती है।**
४. **इस विषय में धीर पुरुष धोखा नहीं खाता।**

तत्व विस्तार :

नन्हीं! जैसे तू जीवात्म रूप इस अपने आधुनिक तन में रहती है; तुम्हारा तन अभी अभी बचपन पीछे छोड़ कर आया है, इस पल जवानी में क़दम धर रहा है, कुछ ही काल के पश्चात् यह जवानी मानो बुढ़ापे से खेलने लगेगी, फिर बुढ़ापा आ जायेगा, तत्पश्चात् यह तन मृत्यु को पा जायेगा। ऐसे ही तुम्हारे पास पहले भी अनेकों तन थे, जिनकी यह गति हुई और ऐसे ही अनेकों तन तुझे आगे भी मिलेंगे, जो यही गति बार बार पायेंगे।

१. तुम्हारा जन्म फ़र्क़ कुल में होगा।
२. तुम्हारा नाम और रूप फ़र्क़ होगा।
३. तुम्हारे नाते-रिश्ते फ़र्क़ होंगे।
४. तुम्हारी परिस्थिति फ़र्क़ होगी।
५. तुम्हारी जाति फ़र्क़ हो सकती है।
६. तुम्हारी समझ फ़र्क़ हो सकती है।
७. तुम्हारी मानसिक अवस्था फ़र्क़ हो सकती है।
८. तुम्हारी पढ़ाई तथा ज्ञान की अवस्था फ़र्क़ हो सकती है।

यानि, जो भी आज तुम्हारे हैं, वह तुम्हारे नही होंगे, कोई और होंगे।

भई! हर एक कुल में तुम्हारा नाम, कुल, समाज, धर्म, जाति, रूप, अमीरी या ग़रीबी की अवस्थायें सब बदल जायेंगी। फिर नये तन को अपनाकर उसे ही 'मैं' कहने लगेगी और उसके नातों को 'मेरा' कहने लगेगी। फिर नई तनोअवस्था को अपना लेगी और उसकी परिस्थितियों को अपना लेगी। भगवान यहाँ यही कह रहे हैं। इसलिये ही तो कहते हैं :

क) जग को सुन्दर बनाने के यत्न करो, तुमने फिर यहीं पे आना है।
ख) जग में धर्म स्थापित करो ताकि तुम्हारा जन्म धर्मात्मा कुल में हो।
ग) अपना कर्तव्य करो ताकि पुनर्जन्म कर्तव्यपरायण लोक में हो।

नन्हीं जान्!

१) जो यह तत्वसार जान लेते हैं, वे अपनी या औरों की मृत्यु पर शोक नहीं करते, दुःखी नहीं होते।
२) जो इस जन्म-मरण के राज़ को जान लेते हैं, वे मृत्युभय से अतीत हो जाते हैं और तन से उठ जाते हैं।
३) जो तनोगति या आयु की क्षणभंगुरता जान लेते हैं, वे मृत्यु भय से अतीत हो जाते हैं और जन्म-मरण से नहीं घबराते, तथा हर्ष अथवा शोक नहीं करते।
४) वे जीवन या मरण की बातों से धोखा नहीं खाते, मोहित नहीं होते।
५) जो जीवन और मरण के राज़ को जानते हैं, वे अपने तन से या नाते बन्धुओं से मोह नहीं करते, संग नहीं करते।

नन्हीं!

क) आत्मा अक्षर और अविनाशी है।
ख) आत्मा शाश्वत तथा अव्यय है।
ग) तन में चेतना आत्मा की है।
घ) आत्मा नित्य निर्विकार है।
ङ) जड़ तन और चेतन आत्मा का सम्बन्ध नित्य बना रहता है।
च) चेतन आत्मा के गुण जड़ तन में नहीं होते, केवल तन में भासित से होते हैं।
छ) तन तो एक मूर्ति है, जब तक इसमें

आत्मा है, तब तक यह चेतन होती है और चलती, फिरती और बोलती है।

ज) इस मूर्ति से संग अच्छा नहीं; यह तो तुझे निश्चित ही छोड़ जायेगी।

झ) इस मूर्ति से संग मूर्खता है, इससे मोह मूर्खता का अन्दाज़ है।

नन्हीं साधिका! तू स्वयं देख ले कि :

१. एक मृत्युधर्मा तन पर तू नाज़ और गर्व करती है।

२. एक मृत्युधर्मा तन को तू जग में स्थापित करना चाहती है।

३. एक मृत्युधर्मा तन के लिये तू संसार में कितने पाप करती है।

४. यह तन तो है ही बेवफ़ा, यह तो तुम्हें छोड़ ही जायेगा, तू यह क्यों नहीं समझ जाती और इससे संग छोड़ देती?

५. तन तुम्हारी कुछ देर की सवारी तो है पर तू तो तन नहीं, यह समझ ले।

६. जितने भी यत्न इस तन की स्थापना के लिये करेगी, वह केवल समय को नष्ट करना है। यदि किस्मत से यह स्थापित हो भी गया फिर भी तो साथ छोड़ जायेगा और यह नाता टूट जायेगा।

साधक! तू अपने आपको पहले जान तो ले, पहचान तो ले, वरना तू अपने आपको बिन जाने ही जीयेगा और फिर मर जायेगा। तुम्हारे साथ किसी ने नहीं जाना और तुम्हारा साथ किसी ने नहीं देना। जन्म-जन्म का साथी तेरा अपना आप है।

अपने लिये, अपने ही कल्याण के लिये, अपने ही जन्म-जन्म के सुख के लिये, जहान में कर्तव्य कर, भागवद् गुण जीवन में व्यय कर। इसी में लोक कल्याण है, इसी में तुम्हारा भी कल्याण है। सो घबरा नहीं, शोक न कर, परम गुण स्थापित करना ही तेरा एकमात्र कर्तव्य है। तू अपना कर्तव्य करता जा।

भगवान कहते हैं, धीर पुरुष यह तत्व जानते हैं। वे घबराते नहीं, वे धोखा नहीं खाते, वे शरीरों को जाता देख कर व्याकुल और शोकग्रस्त नहीं होते।

लाडली! धीर का अर्थ समझ ले!

क) 'धीर' स्वस्थ चित्त वाले को कहते हैं।

ख) विकार रहित चित्त वाले पुरुष को धीर कहते हैं।

ग) स्थिर मन वाले को धीर कहते हैं।

घ) दृढ़ निश्चय वाले को भी धीर कहते हैं।

ङ) विपरीतता में भी प्रशान्त तथा सौम्य व्यक्ति को धीर कहते हैं।

च) स्थिर बुद्धि वाले को भी धीर कहते हैं।

छ) बलवान, बुद्धिमान तथा चतुर को भी धीर कहते हैं।

ज) अतीव धैर्यवान को भी धीर कहते हैं।

नन्हीं! जिसके पास अथाह धैर्य होता है, वह सब कुछ बर्दाश्त कर सकता है। उसका मन नहीं डोलता, उसकी चित्त-वृत्तियाँ शान्त रहती हैं। ऐसा धीर पुरुष शोकग्रसित नहीं होता। ❖

चरण में तेरे बैठ के,
इस चाहना को जलाना है!

एतेषु यश्चरते भ्राजमानेषु यथाकालं चाहुतयो ह्याददायन्।
तं नयन्त्येताः सूर्यस्य रश्मयो यत्र देवानां पतिरेकोऽधिवासः।।५।।

- मुण्डकोपनिषद्, प्रथम मुण्डक - द्वितीय खण्ड, ५ श्लोक

शब्दार्थः

जो कोई भी अग्निहोत्री इन देदीप्यमान ज्वालाओं में ठीक समय पर अग्निहोत्र करता है; उस अग्निहोत्री को निश्चय ही अपने साथ लेकर ये आहुतियाँ सूर्य की किरणें बनकर वहाँ पहुँचा देती हैं; जहाँ देवताओं का एकमात्र स्वामी इन्द्र निवास करता है।

तत्व विस्तारः

उचित समय आहुति पड़े, प्रज्वलित हुई अग्न रे हो।
समिधा गर उसमें पड़े, देख कहें क्या फल रे हो।।१।।

सूक्ष्म तन रश्मि रथ, चढ़ी इन्द्र तक जा पहुँचे।
देवादि देव अधिपति, के घर में वह आ पहुँचे।।२।।

समिधा सूर्य रश्मि भये, रश्मि सु-भाव को कह लूँ।
सुकर्मन् को रश्मि कहूँ, समिधा अग्न को कह लूँ।।३।।

यज्ञ अनुष्ठान विधिवत् हो, नियम बधित पूर्ण करे।
भूमण्डल का नियन्ता जो, सूर्य तलक वह पहुँच सके।।४।।

इन्द्रलोक रश्मि चढ़ी, कहे वह ही तो आ पहुँचे।
मनोलोक में चाह भाव, चरणन् में अरे जा पहुँचे।।५।।

संस्कार चाह के पड़े, वाँछित फल वह पा ही ले।
चाह का पूजन करी, भक्ति फल वह पा ही ले।।६।।

संस्कार कारण तन में, देख लय हो जायेगी।
नव जन्म में प्रदुर होई, पुनः नव जग रच आयेगी।।७।।

देवता लोक में पहुँचे हैं, सूक्ष्म तक वह आ जायें।
देवता गण तुष्टि करें, बाह्य पुष्टि पा जायें।।८।।

इन्द्रिय गण अधिष्ठान, देवन् को वह पा जाये।
पुष्टि जब वह पा जाये, समर्थ यह इक पा जाये।।९।।

इन्द्रिय देव पुष्टित भये, वाँछित फल यह पा जाये।
आहुति निश्चित समय पे दे, इन्द्रलोक तक आ जायें।।१०।।

चाह अग्न दिदायमान, एक रूप में जिस पल हो।
अन्य चाह समिधा पूर्ण, एक चाह में जिस पल हो।।११।।

एकमात्र स्वामी जो है, इन्द्र जिन्हें रे कहते हैं।
मनोलोक पति है जो, स्वर्गलोक रे कहते हैं।।१२।।

साधक रे वह पा जाये, निश्चित चाहना पूर्ण हो।
ज्वाला सूर्य की ओर बढ़े, इन्द्र कृपा से पूर्ण हो।।१३।।

देख देख वह कहते हैं, सूर्य रश्मि पे वह चढ़े।
देव लोक तक होता, देख कहें यूँ पहुँच सके।।१४।।

स्वर्गीय रे सुख पाये, यही विधि है कहते हैं।
विधिवत् अग्नहोत्र रे हो, यज्ञ विधि यह कहते हैं।।१५।।

पर राम मैं पूछूँ तुमसे कहो, स्वर्ग मिले तो क्या हुआ।
स्वर्ग सुख जो पा लिया, फिर मिटे तो क्या हुआ।।१६।।

नित्य सुख रे नहीं मिले, परम सत्त्व रे नहीं मिले।
अनेक पल अनेक श्वास, अज्ञान में अर्पित हुये।।१७।।

इतना समय ही कहाँ मुझपे, और चाहना अब नहीं रही।
क्षणिक सुख जो पा भी लूँ, यह लग्न अब नहीं रही।।१८।।

चाह चाह कर अब चाह थकी, चाह ही समिधा बन गई।
चाह घृत मेरी चाह अग्न, चाह ज्वाला है बन गई।।१९।।

चाह जलाने बैठे हैं, अहम् रूप यह चाहना है।
चरण में तेरे बैठ के, इस चाहना को जलाना है।।२०।।

तू विधि कहे किस विध रे, चाहना पूर्ति हो जाये।
मन चाहे इस चाहना की, अन्त्येष्टि पूर्ण हो जाये।।२१।।

इन्द्र की बतियाँ तुम रे कहो, स्वर्ग लोक की बात कहो।
वेदन् में जो है कही, सुख लोक की राह कहो।।२२।।

नहीं नहीं यह चाह नहीं, इससों उठना ही होगा।
अतृप्त चाहना तृप्त न हो, चाह से उठना ही होगा।।२३।।

पूर्ण तृप्त रे जहाँ होयें, उस लोक की बात कहो।
क्या समझूँ इन यज्ञन् से, वहाँ तलक न पहुँच सके।।२४।।

फिर कहो गर यज्ञ करूँ, विधिवत् होना ही होगा।
कह आये गर न हुआ, विपरीत फल रे होगा।।२५।।

इन्द्रियपति को पा भी लिया, इक टक इक चाहना रे हुई।
भावना फल तो लायेगी, जानूँ जो जैसी रे हुई।।२६।।

विधिवत् से क्यों न समझूँ, तुम भावना की रे कहते हो।
प्रज्वलित अग्न हो भावना की, यही यहाँ पर कहते हो।।२७।।

तन अपनाये जो जन रे, तनो सुख जो माँगे है।
स्वर्गलोक रे जिसे कहो, तन बँधे ही माँगे है।।२८।।

तन नाते वह सुख माँगे, आपेक्षिक सुख ही वह होगा।
तड़प तड़प गर पा भी लिया, बिछुड़े दुःखमय वह होगा।।२९।।

जब मिले डरूँ मैं बिछुड़े न, बिछुड़े फिर रे क्या होगा।
होत्र वेद संस्कार फिरे, तब रे जानो क्या होगा।।३०।।

ऐसे स्वर्ग को क्या करूँ, जो पा के तुमको ही भूलूँ।
ऐसी विधि भी क्या कहूँ, होत्र क्रिया में ही भूलूँ।।३१।।

लक्ष्य रे मेरा तू न हो, इक चाहना हिय में धरा करूँ।
तव नाम को तो मैं लूँ, चाहना नाम रे प्रथम धरूँ।।३२।।

नहीं नहीं ओ राम मेरे, ऐसी विधि रे नहीं कहो।
मरणकाल में पुनः जलें, पावें जब नव जन्म रे हो।।३३।।

मुझे तो तू ही चाहिये, परम मिलन की विधि कहो।
क्योंकर सुन ओ राम मेरे, अब तुमसे ही रे मिलना हो।।३४।।

२७-८-६१

❖ ❖ ❖

मन्त्र

मन्त्र वह होता है जो मुख से बोलो और वही तुम्हारा रूप बन जाये। मंत्र उच्चतम प्रार्थना होती है। जब साधक तनत्व भाव से सच ही उठना चाहता है तो वहाँ तन, मन, बुद्धि और व्यक्तिगत करने वाली 'मैं' का अभाव होने लगता है। उस समय साधक की प्रार्थना 'मैं' की स्थापति अर्थ नहीं बल्कि 'मैं' रहित होती है। यदि सच ही जीव अपने किसी पहलू की स्थापति न करने की चाहना करता हुआ प्रार्थना करे, तो हर प्रार्थना एक पल में सार्थक हो जाती है। वह प्रार्थना ही मंत्र कहलाती है।

प्रार्थना करते करते साधक स्वयं ही उस मंत्र की प्रतिमा बन जाता है। उस मंत्र रूपा प्रार्थना में सच्ची विरह भरी होती है। उसके सार्थक होने के लिये केवल समझ मात्र की ज़रुरत होती है। जो जीव पूर्ण सत्यप्रियता से अपनी सांसारिक 'मैं' को पीछे करता हुआ यह मंत्र कहता है, वह उस पल से महायोगी हो जाता है। उसका हर कर्म 'मैं' रहित, परम सुगंध रूपा समिधा होता है और उसका हर वाक् मंत्र ही होता है। उसे प्रज्ञा प्रवाह भी कहते हैं, यह प्रार्थना ज्ञानी भक्त की होती है।

जब उसने यह जान लिया कि 'मैं शरीर नहीं हूँ', उसके बाद उसकी जो प्रार्थना होगी, उसका तत्व सार बदल जाता है। उसकी प्रार्थना अमर होती हैं। वह प्रार्थना तनत्व भाव से परे की होती है। उस प्रार्थना में मानो वह कह रहा है कि :

तन कारण कुछ न माँगूँ, मुझको कुछ नहीं चाहिये।
'मैं' की बातें क्या करूँ, 'मैं' को ही अब मिटाइये।।

वह ज्ञान, ज्ञान नहीं जो जीवन में न उतरे!

श्रीमती शान्ता देवी द्वारा यह लेख अर्पणा पुष्पांजलि दिसम्बर १९९६ के अंक में से लिया गया है।

भगवान ने हमें सौन्दर्यमय विस्तृत, विशाल व व्यापक जग में मानव का चोला पहना कर भेजा है। सुन्दर संसार, सुसंस्कृत माँ-बाप, सुशिक्षित भगिनी-बन्धु, सखा-संबंधी एवं भौतिक जग के सब सुख उपलब्ध कराये! आज ऐसा लगता है कि इतना बड़ा सौभाग्य पाकर भी मैंने मानव रूप में प्राप्त अमूल्य जीवन को व्यर्थ में ही गँवा दिया। यदि मैं पीछे मुड़ कर अपने जीवन की किताब के पन्ने पलटूँ तो मन में स्वयं पर क्षोभ व ग्लानि होती है और मुझे सन्त कबीर जी की वाणी याद आती है :

'आया था किस काम से, सोया चादर तान के।
सुरत सम्भाल अब गाफ़िला, तू अपना आप पहचान रे।।'

मेरे जीवन का परम सौभाग्य तो देखो कि जीवन के अन्तिम चरण में परम कृपालु भगवान जी की अहैतुकी कृपा ने मुझे परम पावनी, गंगा-सम शीतल, मंगलकरिणी, विपदहरिणी परम पूज्य माँ के संरक्षण में 'अर्पणा' में रहने का सुअवसर प्रदान किया है। बरसों पहले, सद्गुरु रूपा भगवती पूज्य माँ के दर्शन मात्र से ही मेरा आन्तर आनन्द से ओत-प्रोत हो उठा था और ऐसा आभास होने लगा कि किसी अदृश्य शक्ति ने मुझे अपने दर पर स्वयं ही बुला लिया है।

परम पूज्य माँ की असीम करुणा से मुझे केवल गीता ही नहीं, बल्कि अनेकों उपनिषदों की सहज व सुन्दर व्याख्या सुनने को मिली। परम पूज्य माँ ने ऐसे विश्लेषणात्मक ढंग से इन उपनिषदों को समझाया है, जिन्हें श्रवण कर ऐसा लगता है कि परम पूज्य माँ हमारी जन्म-जन्मान्तरों की पिपासा को शान्त कर रहे हैं। इससे भी बढ़कर जो सौभाग्य हमें प्राप्त हुआ है वो यह है कि शास्त्रों की जीवन्त प्रतिमा, परम पूज्य माँ ने शास्त्रों के एक एक श्लोक को अपने जीवन में चरितार्थ किया है। ऐसी ईश्वर की वरदान स्वरूप

माँ के प्रेममय आँचल में मैं अपने जीवन की अन्तिम घड़ियाँ यापन करने के लिये उनकी शरण में बैठी हूँ। यह मेरे राम जी की मुझ मूढ़ा पर अपार कृपा नहीं है तो फिर क्या है?

कई वर्षों से गीता का मैं बराबर पाठ किया करती थी। कई अलग अलग टीकाओं वाली गीतायें भी मैंने पढ़ीं, पर गीता का तत्व ज्ञान ६० वर्ष की आयु तक मेरे कंठ से नीचे न उतरा था। उसी गीता को जब मैंने परम पूज्य माँ व पूज्य छोटे माँ के मुखारविन्द से श्रवण किया तो पूज्य माँ का अपना जीवन गीता के ज्ञान से अक्षरशः तुलता देखा। परम पूज्य माँ ठीक ही कहते हैं कि वह ज्ञान, ज्ञान नहीं जो जीवन में न उतरे। कोरा ज्ञान जीवन में शुष्कता व अहंकार भर देता है। ज्ञान को विज्ञान रूप में, जीवन में उतारने के लिये प्रकाशस्तम्भ पूज्य माँ यद्यपि अपने को गुरु नहीं कहलवातीं और स्वयं को कभी उच्च आसन पर स्थापित नहीं करतीं, परन्तु अर्पणा के हर साधक की प्रेरणा स्रोत वह ही हैं।

जिज्ञासु साधकों व प्रश्नकर्ताओं के प्रश्नों का समाधान मन्दिर में उनके श्रीमुख से सुनकर कर मेरा मन चकित सा रह जाता है। काव्यमय व गद्यशैली में निसृत प्रज्ञा प्रवाह को श्रवण करके एवं बार बार विश्लेषण करने पर समझ आती है कि उनकी वाणी ने शास्त्रों का सरल, सरस और मनोवैज्ञानिक विस्तार ऐसे भावों में किया है जिस राही हम जीवों को अपने 'मैं' 'मम' 'संग' व 'अहंकार' को प्रभु चरणों में समर्पित करने की प्रेरणा मिलती है। उनकी वाणी के अध्ययन से मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि इस अथाह सागर की गहराई में जितनी डुबकी लगायें, उतने ही रहस्यों का ख़ज़ाना हाथ लगता है।

यहाँ आकर आज मुझे यह समझ भी आई है कि यह जीवन 'मैं' व 'अहंकार' की प्रबलता के कारण ही अत्यन्त दुःखी बन चुका है। जग में, घर परिवार में, अपने ही सगे संबन्धियों के साथ अर्हनिश कलह क्लेश तथा विच्छेद ने इस जीवन को नारकीय बना दिया है। ऐसे जग से मुक्त होने की भावना ने अनेक रोगों का रूप धारण कर लिया है। हम सब मुसीबतों का कारण जग ही मानते हैं पर इसके विपरीत परम पूज्य माँ ने कभी भी जग को दोषी नहीं कहा। यह बात तो उन्होंने १९५८ में अपनी तथाकथित साधना के आरम्भ में ही कह दी थी :

'जग ने दुःख मुझे नहीं दिया, क्यों दोष लगाऊँ मैं।
अपने कारण ही दुःखी हुआ, क्यों न मान जाऊँ मैं।।...

माँ कहीं पर भी जग को दोष न देकर उसे अपनी साधना सामग्री ही मानती हैं। मैं तो उनसे यही समझी हूँ कि हमें स्वप्न में भी जग को दोष नहीं देना चाहिये। यह जग तो बहुत सुन्दर है! असुन्दर है तो केवल अपना मन, जो अपनी रुचि-अरुचि, पसन्द-नापसन्द व अनुकूलता तथा प्रतिकूलता की स्थिति में अपनी निश्चित धारणा एवं मान्यता पर चलता है।

वह हमें अतीत अथवा भविष्य में न जाकर, 'इस पल' में जीने के लिये प्रेरित करती हैं। उनकी वाणी को हम किसी भी पृष्ठ से पढ़ना शुरू करें, वह हमें वहीं से जीवन का ज्ञान सुझाती हैं। पूज्य माँ की शरण में आकर मैं इस सत्य को भी समझी हूँ कि हमारे दुःख सुख केवल हमारी मानसिक कल्पना हैं। एक जन जिसे दुःख मानता है, अन्य की दृष्टि में वही सुख है। अतः यह अपने मन की सोच पर निर्भर करता है कि वह विषय-वस्तु को किस रूप में ग्रहण करता है।

पूज्य माँ हमें बार बार एक बात समझाती हैं कि शास्त्र जीवन का वास्तविक आधार हैं, उन्हें ही हम अपना सम्बल मानें। हमारी बुद्धि जब तक शास्त्र अनुकूल नहीं बनेगी, हम मन के हाथों बिक कर अपनी राहों से विचलित होते रहेंगे। अपने राग-द्वेष, संग व अहं से ऊपर उठने की एक ही राह है कि शास्त्र ही हमारी बुद्धि बन जायें। शास्त्र जीवन का वह अमर सत्य है जो परम्परा से चला आ रहा है। अतः शास्त्रों में प्रतिपादित ज्ञान को यदि हम अपने जीवन में विज्ञान रूप में उतार लें, तभी यह जीवन सार्थक हो सकता है। जिसने यह सत्य जान लिया वह विधान के समक्ष नतमस्तक हो जाता है। वह क्रिया-प्रतिक्रिया के भावों से मुक्त हो, हर परिस्थिति को भगवान की देन मानकर, जग में व्यवहार करता है। दुःख भरी परिस्थितियाँ उसके समक्ष भीषण से भीषण रूप में आती हैं, पर दुःख उसे स्पर्श नहीं कर पाते, बल्कि वह गर्मी सर्दी की भांति, सुख दुःख को भी जीवन में सहज ही स्वीकार करता है। साधक जान लेता है कि रेखा में सुख दुःख नहीं, वह तो मन में हैं।

शास्त्रों को आधार मानने वाले का यह विश्वास अटूट होता है कि सर्वाधार, सर्व विश्वेवर, सर्वपालक, नियन्ता ब्रह्म ही हैं। हमारी जीवन कहानी केवल संग बीज की ही है और जन्म-मरण केवल संगी भाव के ही होते हैं। इस सत्य के प्रकाश से दिशा ग्रहण करने वाला साधक अपने अहंकार, राग द्वेष, संग मोह व संशयों से मुक्त होता जाता है। वह नाम को धुरी बनाकर ही राममय जीवन को अपना लक्ष्य मानता है।

परम पूज्य माँ का समस्त जीवन इसी सत्य की अभिव्यक्ति है। वह तनत्व भाव व कर्तृत्व भाव से नितांत परे हैं। 'मैं' उन के पास है ही नहीं। वह तो केवल दूसरों के लिये ही जीते हैं। तद्रूपता उनका विशेष गुण है। जो भी उनके सामने आया, वो बच्चा हो या बूढ़ा, शिक्षित हो या अशिक्षित, धनी हो या निर्धन, निर्बल हो या बलवान, पूज्य माँ आने वाले के स्तर पर उतर कर उनकी आवश्यकता पूर्ति में जुट जाती हैं।

राम भाव में रंगे परम पूज्य माँ के व्यक्तित्व को परम पूज्य गुरु व करुणामयी माँ के रूप में पाकर मन में एक ही चाहना उठती है कि मैं भी अपने नाम रूप को भूल कर नदी की बूँदवत् उस अनन्त सागर में विलीन हो जाऊँ और उन्हीं के शव्दों में बस यही याचना करती हूँ कि :-

'अन्य कोई चाहना नहीं, अनन्य भक्ति हूँ माँग रही।
अव्यभिचारिणी भक्ति दो, बस इतनी शक्ति माँग रही।।'

कृपा करो माँ! कृपा करो। ❖

आप सृष्टि रचयिता ने मुझमें काया ले ली..

श्रीमती पम्मी महता

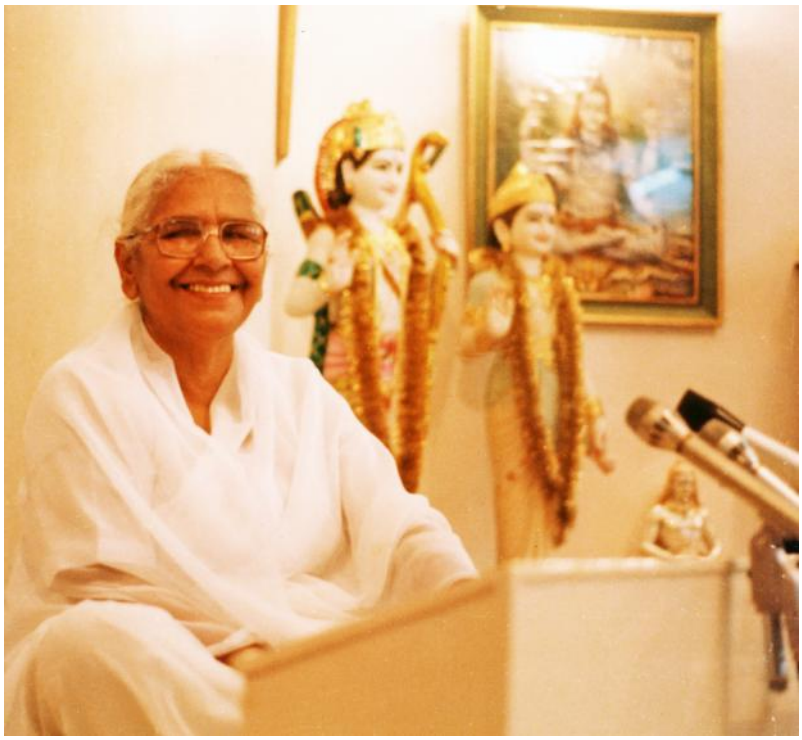

अद्‌भुत, अतीव अद्‌भुत! आप प्रभु माँ की इस देन को देख कर, आपके प्रति हे श्री हरि माँ इस नमानी के हाथ जुड़ गये.. तन, मन सभी आपके चरणन् में झुक गये! आंतर में आपके काया लेते ही, आंतर आनन्द में हिलोरे लेने लगा!! आप श्री हरि माँ अपनी विभूतियों से नवाज़ने लगे.. आप अपनी समतल भूमि पर उतार लाये.. कितनी सुन्दर अनुभूति थी यह!

सच की यह अनुभूति, कि आप सभी के हो कर ही मेरे हो, ने आनन्दित कर दिया! आत्मविभोर हो उठी! आप श्री हरि माँ की सर्वव्यापकता को देखी देखी हैरतज़दा हो रही थी.. आप श्री हरि माँ प्रभु जी के दीदार इस तरह होंगे यह तो जानती ही नहीं थी.!!

आपकी मुहब्बत में छाया नहीं होती.. निर्मल प्रेम ने मूर्त्त रूप धारण कर लिया.. धन्य धन्य हो गई, आप से आपकी यह कनीज़! आपने यूँ तो कभी मेरा हाथ छोड़ा ही नहीं था; मगर आज एक बार फिर लगा, आपने कर ही नहीं पूर्णतया मुझे ही थाम लिया! माँ, क्या यही विराट रूप के आपके दर्शन होते हैं?

अद्‌भुत, अतीव अद्‌भुत!! आँखें मूँद कर आप ही आपको निहारती हुई निरन्तर निहारे चली जा रही थी। इस करुण कृपाप्रसाद को शब्दों में बयां नहीं कर पा रही थी.. बस हृदय आँसुओं से भरा रुख़सार से ढलता ही चला जा रहा था.. पूर्णतया भीग गया था मेरा आंतर बाहर, ऐसा दिव्य प्रसाद पाई धन्य धन्य महसूस कर रही थी!

हक़ीक़त की इस धरा पर खड़ी, आपको नतश्री बारम्बार देते हुये आप ही को नमन दे रही थी। आपकी इबादत का दूसरा नाम मुहब्बत है। इसका एहसास तो आप श्री हरि माँ ने बहुत पहले ही करा दिया था..

मगर मुहब्बत की इस पराकाष्ठा ने तो जैसे मोल ही ले लिया मुझे! आपके प्यार की लूट में क्या क्या नहीं दिया आपने.. मैं तो कभी पात्र ही नहीं थी! मगर आपने तो पात्र-कुपात्र कभी देखा ही नहीं था। कैसे इसे चुन कर, इस मनोधरा पर अपनी लीला रचा दी!

हे लीलाधर, सच ही आपकी अपरम्पार महिमा में आपकी लीला का यह विस्तार देख करी, आपकी निराली व अनूठी छवि को हृदय व आँखों में सँजोकर आपके श्री चरणन् में लोटने लगी! मन ही मन यह मनोभूमि, यह हृदय-स्थली, आपके काया लेते ही कैसे पावन हो गई! अपने आंतर के अँधेरे इस क़दर ज्योतिर्मय हो गये कि आप और आपकी ज्योत्सना का आभार मानती हूँ, जिन प्रभु माँ ने मुझे आवाज़ दे कर बुलाया था.. उन्होंने ही आंतर में काया ले ली!

आप श्री हरि जगद्‌जननी के इतने पावन क़दमों के भव्य दर्शन निरन्तर होते रहे और इसी चलने में आप असीम ने दिखा दिया कि प्रेम की कोई सीमा नहीं होती.. आपकी प्रीत तो सच ही इबादत है! आप ही को सिजदे में धर हे रब साईं, आपको सिजदा देती हूँ और बार बार इन्हीं क़दमों में लोटती ही चली जा रही हूँ।

कैसे धन्यवाद करूँ आपका हे श्री हरि माँ प्रभु जी, बस दुआ के लिये ही यह हाथ उठे हुये आपके क़दमों को चूमते हुये, आपकी मेहरबानियों से भरे अपने दामन को देखते हुये व आपके आशीर्वादों से भरे आपके हाथ महसूस करते हुये; यही दुआ है मेरी आपसे कि यह

जीवन सदा सदा के लिये आपकी अमानत हो जाये और आपकी हर देन जिससे आपने नवाज़ा हुआ है मेरे जीवन में धारण हो जाये! जो आपके प्रति असीम श्रद्धा, भक्ति-भाव से अतीव प्रेम व प्रेमपूर्वक हृदय से पूर्णतया आपके श्री हरि चरणन् में अर्पित व समर्पित हुई रहूँ! आमीन।

हे श्री हरि माँ, आपका अवतरित होना सगुण वेष में... हमारे लिये कैसी सुन्दर मिसाल बन गई है! जिसे कोई भी झुठला नहीं सकता... न इसां, न ज़माना, क्योंकि जो अपने आप में सम्पूर्ण है उसे कौन कलंकित कर सकता है? कौन है जो आपके क़दमों को रोक सकता है? कोई भी विरोध आपको विचलित नहीं कर सकता! जो पूर्ण की पूर्णता में समाया हुआ है, पूर्ण सृष्टि जिसमें समाई हुई है, उनको कोई शै छू नहीं सकती!

धन्य हैं यह आँखें, जिन्होंने इस श्री विग्रह के दर्शन किये हैं!
धन्य हैं यह कान, जिन्होंने इसकी महिमा का सामगान सुना है!

एक भजन का स्मरण हो आया-

... धन्य धन्य वह भूमि, प्रभु ने लिया जहाँ अवतार।

धन्य है वह स्थान, जहाँ पर प्रेम का हो प्रचार।

धन्य है तीर्थ जिनकी यात्रा, मुक्ति की है बात।...

धन्य हैं वह रहगुज़र जिस पे चल के आपके क़दमों ने ही उसे नवाज़ा है और आपके नक़्शेक़दम पे चलने को व इसी रहगुज़र पर बढ़ने को क़दम उठा पाने की सामर्थ्य आपसे पाई है। जब करण-कारण आप माँ प्रभु जी स्वयं हैं, तो आप मौन होई हमें अपने क़दमों के पीछे पीछे ले ही जायेंगे। यही तो रहगुज़र बनाई है जिस पर क़दमबक़दम चलना है! आपकी प्रकट लीला का उत्सव मेरी शरीकेज़िन्दगी बनाने वाली हे श्री हरि जगद्जननी माँ प्रभु जी, आपको शतः शतः प्रणाम!

हे माँ, आपने काया ली है तो आप ही इसके क़दम अपने क़दमों के पीछे पीछे चला कर इसे इसकी मंज़िल तक ले जाइयेगा... जहाँ जाकर आप ही आप में विराम मिल जाता है!

आप माँ यूँ ही लिवा ले जायेंगे न मुझे.. अवश्य ले जाइयेगा। मुझे आप माँ की इंतज़ार रहेगी! हे श्री हरि माँ, मेरी अनुनय-विनय स्वीकार करी मुझे अनुगृहित कर दीजियेगा हमेशा की तरह! हरि ओऽम् हरि ओऽम् हरि ओऽम्!

हे कृपालु दयालु नाथ आपने आंतर में काया ली है तो ज़ाहिर है आप ही आप चलेंगे और यह कनीज़ पाछे पाछे चलती चली जायेगी आपके.. जहाँ तलक चलायेंगे! ख़ुदा करे चलती चलूँ आपकी रवायनगी में.. बादस्तूर यारब चलती ही चलूँ। आमीन!

हरि ओऽम् ❖

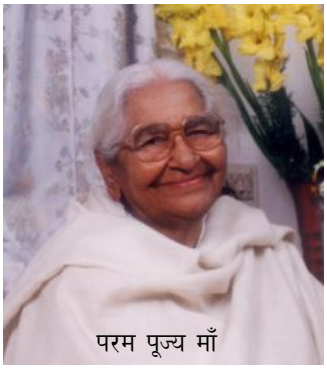
परम पूज्य माँ

अर्पणा
समाचार पत्र

अर्पणा ट्रस्ट, मधुबन,
करनाल, हरियाणा
जून २०१८

अर्पणा आश्रम से समाचार

साधना दिवस

९ मार्च २०१८ को मधुबन में, अर्पणा परिवार के सदस्य परम पूज्य माँ को भक्तिपूर्ण श्रद्धांजलि देने के लिए एकत्रित हुए। ९ मार्च १९५८ को परम पूज्य माँ की भक्तिमय यात्रा प्रारम्भ हुई जो सभी जिज्ञासुओं के लिए आध्यात्मिक पथप्रदर्शक बनी। आज और आगामी युगों-युगों तक उनके प्रेरणादायी शब्द हमें आन्तरिक आनन्द एवं उन्मुक्ति की ओर अग्रसर करते रहेंगे।

महासमाधि दिवस

वह कहीं नहीं गये! उनके मुख से बहे शब्द अब भी हर पल हमारे हृदयों में एवं सत्संगों राही प्रतिध्वनित होते रहते हैं। पूज्य माँ अकसर कहा करते थे, "शास्त्र केवल प्रवचन अथवा उपदेश ही नहीं हैं, वे तो भगवान का आदेश हैं।" परम पूज्य माँ ने प्रत्येक साधक की आंतरिक एवं मानसिक क्षमता के अनुसार दिनचर्या में अभ्यास करने के लिए आध्यात्मिक ज्ञान के सर्वोच्च तथ्यों एवं रहस्यों को उजागर किया।

१६ अप्रैल २०१८ का दिन, उस दिव्य आत्मा के स्मरणोत्सव का एक सुन्दर दिन था, जो आज भी अपने शिशुओं का प्रेममय मार्गदर्शन करते हैं।

पूज्य छोटे माँ एवं 'उर्वशी' को याद करते हुए!

पूज्य छोटे माँ को हमारा हार्दिक कृतज्ञतापूर्ण नमन, जिन्हें १० मई २०१८ को अर्पणा आश्रम, मधुबन एवं मोलरबन्द, दिल्ली में आयोजित विशेष कार्यक्रमों द्वारा याद किया गया। परम पूज्य माँ के मुखारविन्द से बहा आध्यात्मिक ज्ञान का ख़ज़ाना.. ७० से भी अधिक बहुमूल्य ग्रंथों को, पूज्य छोटे माँ द्वारा लेखनीबद्ध किया गया। आध्यात्मिक ज्ञान के इस ख़ज़ाने को 'उर्वशी' नाम दिया गया.. जो हमें और आने वाली कई पीढ़ियों को विशेष उपहार के रूप में प्राप्त हुआ है।

दिल्ली के कार्यक्रम

डॉ. गैन्द अर्पणा के शैक्षिक कार्यक्रमों को देखने आये

१७ व १८ अप्रैल २०१८ को डॉ. रघुनन्दन गैन्द, न्यूरॉलोजिस्ट कंसल्टेंट (सेवानिवृत), Guy's Hospital, लंदन, एवं अर्पणा चैरिटेबल ट्रस्ट, यूके के संस्थापक ने, अर्पणा के शैक्षिक कार्यक्रमों का दौरा किया। यहाँ समाज के सबसे वंचित वर्ग को अच्छी गुणवत्ता वाली शिक्षा दी जाती है जिससे उन्हें अच्छी जीविका (करियर) का मौका मिल सके।

वंसत विहार में डॉ. गैन्द अर्पणा के ख़ूबसूरत 'रिजॉयस सैन्टर' को देखकर बहुत प्रसन्न हुए, जिसे बनाने के लिए अर्पणा यूके द्वारा ही धन जुटाया गया था। यहाँ वंचित बच्चों के लिए 'ज्ञान आरम्भ' कार्यक्रम पूर्ण क्षमता के साथ चलाया जा रहा है। १-९ तक की कक्षाओं के लिए इंग्लिश, हिन्दी, विज्ञान, गणित एवं कम्प्यूटर के लिए ट्यूशन कक्षाएं आयोजित की जाती हैं।

मोलरबंद के शिक्षा केन्द्र में डॉ. गैन्द ने कई पूर्व विद्यार्थियों के साथ बातचीत की, जो अब अच्छी प्रकार से जीवनयापन कर पा रहे हैं। तत्पश्चात् वह अन्य वरिष्ठ कक्षाओं के छात्रों एवं प्राथमिक कक्षाओं के छात्रों से भी मिले।

अर्पणा के 'रिजॉयस सैन्टर' में छात्रवृत्ति कार्यक्रम

वसंत विहार में अर्पणा के 'रिजॉयस सैन्टर' में २ मई को 'ज्ञान आरम्भ' के १-९ तक की कक्षाओं के छात्रों को गणित, अंग्रेज़ी, हिन्दी, और समग्र योग्यताओं में प्रवीणता के लिए ३३ छात्रवृत्तियाँ भी दी गईं। १२ अन्य छात्रों को भी कला प्रतियोगिता के लिए पुरस्कार दिये गये। श्रीमती मीनाक्षी माथुर, शिक्षा कार्यक्रम की प्रभारी, द्वारा वयस्कों के लिए एनआईआईटी के प्रमाणित कोर्स और स्पोकन इंग्लिश (Spoken English) कक्षाओं की भी शुरुआत की गई।

जैविक खेती

६ मई को वसंत विहार में अर्पणा के 'रिजॉयस सैन्टर' में जैविक खेती का एकसत्र आयोजित किया गया। इसमें १७ महिलाओं ने भाग लिया, जो अर्पणा के ही छात्रों की मातायें हैं.. इस सोच के साथ कि उन्हें अपने बच्चों के अच्छे स्वास्थ्य के साथ-साथ आय उत्पादन का स्रोत भी मिल जायेगा। प्रत्येक पंजीकृत व्यक्ति को जैविक बीज एवं जैविक खाद से भरे हुए बैग दिये गये जिन्हें वह अपने-अपने घरों में आसानी से उगा सकें। इस उत्पाद को वे अपने नियोक्ताओं और अन्य लोगों को भी बेच सकते हैं जिससे उन्हें आय की वृद्धि में भी सहायता मिलेगी।

हिमाचल की गतिविधियाँ

किसान सहकारी समितियों के लिए प्रशिक्षण शिविर

अर्पणा के सहयोग से हिमाचल प्रदेश के किसानों के निर्वाह हेतु किसान सहकारी समितियों के लिए २ एकदिवसीय प्रशिक्षण शिविर आयोजित किये गये। दोनों शिविरों का संचालन सरू के किसान विज्ञान केन्द्र के डॉ. संतोष भराई, सब्ज़ी कृषि विशेषज्ञ द्वारा किया गया।

१९ मार्च २०१८ को गाँव बढिया कोठी की 'रावि घाटी किसान सहकारी समिति' के लिए एक शिविर आयोजित किया गया जिसमें ९ पुरुष किसानों और ४६ महिला किसानों ने भाग लिया।

गजनोई सहकारी किसान समिति का शिविर २० मार्च को आयोजित किया गया जिसमें १३ पुरुष किसानों और ४१ महिला किसानों ने भाग लिया।

निःशुल्क बहु-विशेषता शिविर

डॉ. राणा अस्थि रोग विशेषज्ञ रोगी के साथ

अर्पणा हेल्थ केयर एवं डायग्नोस्टिक सेंटर, अपर बकरोटा, डलहौज़ी, आसपास के क्षेत्रों और दूरस्थ गाँवों के पहाड़ी लोगों के लिए ही स्थापित किया गया है, जहाँ दैनिक क्लीनिक आयोजित किये जाते हैं। ये लोग आधुनिक चिकित्सा देखभाल पाने में असमर्थ हैं। कई रोगियों को उच्च चिकित्सा की भी आवश्यकता होती है, उसके लिए अर्पणा इन बहु-विशेषताओं वाले निःशुल्क शिविरों का आयोजन करता है। इन शिविरों का पहाड़ी लोगों द्वारा बहुत उत्सुकता से इंतज़ार किया जाता है जो अन्य स्थान पर जा पाने अथवा डॉक्टरों की फीस का भुगतान कर पाने में असमर्थ होते हैं।

२२ अप्रैल २०१८ को ऐसे ही एक निःशुल्क बहु-विशेषता वाले शिविर का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि डॉ. श्रीमती किरण चड्डा IAS (सेवानिवृत), द्वारा इस शिविर का उद्घाटन किया गया, जिन्होंने बहुत उदारतापूर्वक एक ऑक्सीजन कंसेंट्रेटर भी भेंट किया। आपातकालीन रोगियों के लिए इसकी बहुत आवश्यकता रहती है। ५ शिविर इस प्रकार थे :

१. स्त्रीरोग शिविर - सत्यम अस्पताल, सुलतानपुर, चम्बा के डॉ. हेमन्त शर्मा MD ने ३२ मरीज़ों की जाँच की। ५ रोगियों को ऑपरेशन की ज़रूरत थी, जिनका भुगतान भी अर्पणा द्वारा ही किया गया।

२. अस्थि विशेषज्ञ - राणा अस्पताल, सुलतानपुर के डॉ. प्रशांत राणा ने ५२ रोगियों की जाँच की।

३. दंत विशेषज्ञ - डॉ. संजीव वर्मा BDS ने १४ दंत रोगियों का इलाज किया।

४. त्वचा विशेषज्ञ - २० रोगियों की जाँच डॉ. सीबीपी सिंह द्वारा की गई।

५. सामान्य चिकित्सा - डॉ. सीबीपी सिंह द्वारा २१ सामान्य रोगियों का परीक्षण किया गया।

निःशुल्क शल्य चिकित्सा एवं ईएनटी शिविर - ५ व ६ मई को आयोजित किये गये।

शल्य चिकित्सा शिविर - डॉ. वाई. पी. गंडोत्रा, (MS) ने ४२ रोगियों की जाँच की, उन में से ५ रोगियों की पठानकोट स्थित अपने अस्पताल में आधी दर पर सर्जरी की।

ईएनटी शिविर कैम्प - डॉ. पुनीत पराशर, (MS) ने ६६ रोगियों की जाँच की व मुफ़्त निःशुल्क परीक्षण प्रदान किये गये। हिअरिंग ऐड ((Hearing Aid) बहुत उचित दरों पर उपलब्ध कराये गये।

अर्पणा, हिमाचल प्रदेश में चिकित्सा शिविरों के आयोजन के लिए बैजनाथ भंडारी पब्लिक चैरिटेबल ट्रस्ट, नई दिल्ली एवं ग्रामीण विकास कार्यक्रमों के लिए टाइड्ज़ फाउंडेशन यूएसए का अत्यन्त आभारी है।

हरियाणा समाचर

कौशल प्रशिक्षण संस्थान का दौरा

श्री ललित, निर्देशक प्रशिक्षण संस्थान, एसएचजी महिलाओं से बात करते हुए

अर्पणा द्वारा चलाये जा रहे ६५ गाँवों के ११८ स्वयं सहायता समूहों में से १५० से भी अधिक महिलाओं द्वारा गाँव काछवा में पंजाब नेशनल बैंक के कौशल प्रशिक्षण संस्थान का दौरा किया गया, जहाँ पर ग्रामीण विकास मंत्रालय के अन्तर्गत स्व रोज़गार के लिए कौशल बढ़ाने का निःशुल्क कार्यक्रम चलाया जा रहा है।

कौशल प्रशिक्षण में डिटर्जेंट बनाने, पापड़, अचार एवं मशरूम (खुम्बी) की खेती के लिए प्रशिक्षित किया जाता है। प्रशिक्षुओं को सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त प्रमाणपत्र दिया जाता है जिसके साथ वह व्यापार ऋण के लिए आवदेन कर सकते हैं। ३० पुरुषों या महिलाओं का कोई एक समूह भी अपने गाँव में प्रशिक्षण की व्यवस्था करवा सकता है, जिस पर होने वाला सारा व्यय संस्थान द्वारा किया जायेगा।

हरियाणा में ग्रामीण विकास कार्यक्रमों के अनुदान के लिए यूएसए से टाइड्ज़ फाउंडेशन एवं इन्टरनैशनल डिज़ास्टर एण्ड रिलीफ़ फंड के प्रति हमारा हार्दिक आभार।

अर्पणा अस्पताल के लिए ओसीटी मशीन

ऑप्टिशियंस की एक सबसे बड़ी श्रृंखला, Specsavers ने अर्पणा अस्पताल को एक ओसीटी मशीन प्रदान की, जिसके लिए अर्पणा ग्वेर्नसे के अध्यक्ष, पीटर रॉफी, माध्यम बने। उन्होंने ही Specsavers की सीईओ डेम मैरी पर्किन्ज़ से अर्पणा अस्पताल के नेत्र विभाग में रैटिना की इमेजिंग विश्लेषण के लिए उन्नत प्रौद्योगिकी की आवश्यकता के विषय में बतलाया।

डेम मैरी ने बड़ी सहजता से उदारतापूर्वक यह मशीन उपलब्ध करवाई, जिससे कई ग़रीब और ग्रामीण रोगियों के रोग जाँचने में सहायता मिल रही है।

Arpana Trust and Arpana Research & Charities Trust are both approved under Section 80G of the Income Tax Act, 1961, giving 50% tax relief for donors in India.

FCRA Registration No. for Arpana Trust is 172310001
FCRA Registration No. for Arpana Research & Charities Trust is 172310002

Send your contribution for dissemination of humane values & medical and community welfare services in Delhi to:

Arpana Trust, Madhuban, Karnal, Haryana 132 037

Send your contributions for health & development services in Haryana & Himachal to:
Arpana Research & Charities Trust, Madhuban, Karnal, Haryana 132 037

Send contributions in USA to:
Mr. Vinod Prakash, President, IDRF, 5821 Mossrock Drive, North Bethesda, MD 20852
Mr. Jagjit Singh, AID for Indian Development, 84 Stuart Court, Los Altos, CA 94022-2249

Send contributions to Arpana Canada:
c/o Mrs. Sue Bhanot, 7 Scarlett Drive, Brampton, Ontario L6Y 3S9, Canada

Please let us know by email or telephone, whenever you transfer funds to Arpana.

Information & Resources Office: 91-184-2390905 **Executive Director:** 91-9818600644
emails: **at@arpana.org and arct@arpana.org**
Contact person: Mrs. Aruna Dayal, Director Development. Mobile 91-9991687310
Websites: **www.arpana.org** **www.arpanaservices.org**

Arpana Ashram

Research

Publications & CDs

Arpana endeavours to share its treasure of inspiration – the life, words and precept of *Pujya Ma*, through the publication of books and cassettes.

Publications

गीता	Rs.300
कठोपनिषद् हिन्दी	Rs.120
श्वेताश्वतरोपनिषद्	Rs.400
केनोपनिषद्	Rs.36
माण्डूक्योपनिषद्	Rs.25
ईशावास्योपनिषद्	Rs.20
प्रश्नोपनिषद्	Rs.50
गंगा	Rs.40
प्रज्ञा प्रतिभा	Rs.30
ज्ञान विज्ञान विवेक	Rs.60
मृत्यु से अमृत की ओर	Rs.36
जपु जी साहिब	Rs.70
भजनावली	Rs.80
वैदिक विवाह	Rs.24
गायत्री महामन्त्र	Rs.20
नाम	Rs.15
अमृत कण	Rs.12
Lets Play the Game of Love	Rs. 400
Bhagavad Gita	Rs.450
Kathopanishad	Rs.120
Ish Upanishad	Rs.70
Prayer	Rs.25
Love	Rs.20
Words of the Spirit	Rs.12
Notes	Rs.10

Bhajan CDs

ईशावास्योपनिषद् (a deluxe 8 CD set)	Rs.2000
स्वरांजलि - भाग १ और २	Rs.175each
नमो नमो	Rs.175
उर्वशी भजन	Rs.175
हे राम तुझे मैं कहती हूँ - भाग १	Rs.75
गंगा (भाग १ और २)	Rs.75each
राम आवाहन	Rs.75
तुमसे प्रीत लगी हे श्याम	Rs.75
हे श्याम तूने बंसी बजा	Rs.75

For ordering of books, please address M.O./DD to: **Arpana Publications** (payable at Karnal). Kindly add Rs. 25 to books priced below Rs. 100 & Rs. 40 to books above Rs. 100 as postal charges

Arpana Pushpanjali

Hindi/English Quarterly Magazine

Subscription	**Annual**	**3yrs.**	**5yrs.**
India	130	375	600
Abroad	350	1000	1650

Advertisement	**Single**	**Four**
Special Insertion (Art Paper)	10,000	
Colour Page	3500	12,000
Full Page (b&w)	2000	6000
Half Page (b&w)	1200	4000

(Amounts are in Rupees)

Subscription drafts to be addressed ... **Arpana Trust (Pushpanjali & Publications)**

Delhi Contact Person:
Mr. Inderjeet Anand
E - 22 Defence Colony,
New Delhi 110024
Tel: 41553073

Donation cheques to be addressed to:
Arpana Trust (payable at Delhi)

Arpana Trust *- Donations for Spiritual Guidance Activities, Publications, Scholarships and Delhi Slum Project. Regd. under FCRA (Regd, number 172310001) to receive overseas donations.*

Applied Research

Medical Services

In Haryana
- 130 bedded rural Hospital
- Maternity & Child Care
- Family Planning
- Eye Screening Camps
- Specialist Clinics
- Continuing Medical Education

In Himachal
- Medical & Diagnostic Centre
- Integrated Medical & Socio-Economic Centre

In Delhi Slums
- Health care to 50,000
- Immunisations
- Antenatal Care
- Ambulance

Women's Empowerment

Capacity Building
- Entrepreneurial activities
- Local Governance
- Micro-Planning
- Legal literacy

Self Help Groups
- Savings
- Micro credit
- Federation
- Community Health
- Exposure Visits

Gender Sensitization

Income Generation through Handicraft Training Skills

Child Enhancement

Education
- Children's Education
- Vocational Education
- Cultural Opportunities
- Day Care Centres
- Pre-school Care & Education

Health
- Nutrition Programme
- School Health Programme

In Delhi Slums
- Environment, Building Parks & Planting trees
- Housing Project
- Waste Management

Arpana Research and Charities Trust *Exempt U/S 80 G (50% deduction) on donations for the hospital & Rural Health Programmes. Regd. under FCRA (Regd. number 172310002) to receive overseas donations.*

Contact for Questions, Suggestions and Donations:
Mr. Harishwar Dayal, Executive Director, Arpana Group of Trusts, Madhuban, Karnal - 132037, Haryana.
Tel: (0184) 2380801- 802, 2380980 Fax: 2380810 Email: at@arpana.org / Web site: www.arpana.org
All donation cheques/ DD to be addressed to : ARPANA TRUST (payable at Karnal)